

//--सुविचार--//

जीतने से साहस का निर्माण नहीं, होता बल्कि यह आपकी मेहनत और जुनून से बनता है।

सूर्योदय/सूर्यास्त

उदय : 6.06 प्रातः

अस्त : 5.54 संध्या

प्रदेश का मौसम

स्थान	अधिकतम	न्यूनतम
रांची	33.0	19.0
जमशेदपुर	37.0	19.0
हजारीबाग	34.0	19.0
डालटनगंज	36.0	18.0



रंगों का पर्व होली की हार्दिक शुभकामनाएं

दैनिक नवप्रदेश के पाठकों, शुभेच्छुओं, विज्ञापनदाताओं तथा होकर बंधुओं को रंगों का त्योहार होली की हार्दिक शुभकामनाएं।

अवकाश की सूचना

रंगों का त्योहार होली के अवसर पर दैनिक नवप्रदेश का कार्यालय 07 एवं 08 मार्च को बंद रहेगा। अतः अखबार का अगला अंक 10 मार्च को प्रकाशित होगा।

अगले तीन दिनों तक होगी बारिश

नई दिल्ली : देश के अलग-अलग हिस्सों में तेजी से बढ़ते तापमान पर पिछले दो दिन में कमी देखने को मिल रही है। कई राज्यों में राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश के साथ ही कई राज्यों में बारिश होने से तापमान में कमी दर्ज की गई है। पिछले दो दिन में पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र में शनिवार और रविवार को छिटपुट बारिश या बर्फबारी हुई है। अगले तीन दिनों तक झारखंड समेत कई राज्यों बारिश होने का अनुमान है। होली के बारिश से भाँगना तय माना जा रहा है।

दैनिक

प्रदेश के साथ पूरा देश

नवप्रदेश

अंदर के पृष्ठों पर

3 | राजधानी

5 | झारखंड

6 | अभिव्यक्ति

7 | झारखंड

रांची, मंगलवार, 07 मार्च 2023, फाल्गुन शुक्ल पक्ष पूर्णिमा, विक्रम संवत-2079 वर्ष-08 अंक-317 पृष्ठ-12, मूल्य - 3 रुपये

रांची, रायपुर, बिलासपुर, भोपाल व जबलपुर से एक साथ प्रकाशित

डीजीपी की समीक्षा. होली, सब-ए-बरात के मद्देनजर बनी पुलिस की रणनीति

चप्पे-चप्पे पर रहेगी कड़ी नजर

अपराधकर्मियों एवं असामाजिक तत्वों पर रखी जायेगी कड़ी निगरानी

नवप्रदेश संवाददाता

रांची : झारखंड के पुलिस महानिदेशक एवं महानिरीक्षक ने होली, शब-ए-बरात एवं रामनवमी त्योहारों के मद्देनजर कड़ी नजर रखने का निर्देश पुलिस पदाधिकारियों पर दिया है। डीजीपी ने सोमवार को पुलिस मुख्यालय स्थित सभागार में अपराध नियंत्रण एवं विधि-व्यवस्था की समीक्षा की। बैठक में राज्य के सभी प्रक्षेत्रीय पुलिस महानिरीक्षक क्षेत्रीय पुलिस उप महानिरीक्षक, वरीय पुलिस अधीक्षक एवं सभी पुलिस अधीक्षकों ने भाग लिया। इस बैठक में डीजीपी ने सभी प्रक्षेत्रीय पुलिस महानिरीक्षक, क्षेत्रीय पुलिस उप महानिरीक्षक एवं जिले के पुलिस अधीक्षकों से राज्य में त्योहारों के अवसर पर हर हाल में शांति व्यवस्था कायम रखने का निर्देश दिया। विधि-व्यवस्था एवं अपराध नियंत्रण हेतु जिलावार समीक्षा की गई। डीजीपी ने कहा कि त्योहारों को शांतिपूर्ण सम्पन्न करने हेतु असामाजिक तत्वों पर निगरानी रखते हुए उनके विरुद्ध निरोधात्मक कार्रवाई करें। उन्होंने सभी पुलिस अधीक्षकों को जिले के सभी संवेदनशील जगहों को चिह्नित करते हुए वैसे स्थानों से लगातार सूचना संकलन करने, शांति समिति की बैठक करने एवं स्थानीय लोगों से लगातार सम्पर्क बनाये रखते हुए सघन गश्ती एवं चेकिंग करने का निर्देश दिया।



फरारियों को अविलंब गिरफ्तार करें

डीजीपी ने सभी वरीय पुलिस अधीक्षक एवं पुलिस अधीक्षकों को अपने-अपने जिला में पूर्व में घटित सांप्रदायिक घटनाओं के आरोपित अपराधकर्मियों पर कड़ी निगरानी रखने एवं फरार अभियुक्तों को अविलंब गिरफ्तार करने का निर्देश दिया। अपराध नियंत्रण हेतु संगठित अपराधिक गिरोहों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई करने, संगठित अपराधिक गिरोह के फिार अपराधकर्मियों को हर हाल में गिरफ्तार कर अपराध पर लगाम लगाने सहित विगत 5 वर्षों से अधिक अवधि के लंबित कांडों का त्वरित गति से निष्पादन करने पर जोर दिया। प्रतिवेदित एवं निष्पादित काण्डों, वारंट कुर्की के निष्पादन, मानव तस्करी के काण्डों एवं न्यायालय परिसर / माननीय न्यायधीशों एवं आवासीय परिसरों की सुरक्षा की समीक्षा करते हुए आवश्यक दिशा-निर्देश दिये।

धार्मिक स्थलों की 24 घंटे निगरानी करें

डीजीपी ने कहा कि सभी धार्मिक स्थलों की चौबीसों घंटे करें निगरानी तथा आस-पास के सीसीटीवी दुरुस्त किये जायें। बैठक में महानिदेशक ने डीजे पर भड़काऊ गाना बजाने वालों पर कार्रवाई तथा सोशल मीडिया एवं वॉट्सप पर विशेष निगरानी रखते हुए किसी प्रकार की ढील नहीं बरतने का निर्देश दिया। साथ ही त्योहारों के दौरान माहौल बिगाड़ने का प्रयास करने वालों के साथ सख्ती से पेश आने ताकि उपद्रवी किसी तरह का धार्मिक

राज्य में 10,000 जवान तैनात

रांची। राजधानी रांची सहित पूरे राज्य में होली को लेकर सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं। शहर और ग्रामीण इलाके में विभिन्न जगहों को चिह्नित कर अतिरिक्त जवानों की तैनाती की गई है। सुरक्षा में 10 डीएसपी, 15 इंसपेक्टर और ढाई सौ दरोगा के अलावा 2000 जवानों को तैनात किया गया है। होली के दिन सड़कों पर हुड़दंग मचाने वालों पर विशेष नजर रखने को कहा गया है। वहीं दूसरी ओर पुलिस मुख्यालय ने होली को लेकर सभी जिलों के एसपी को विशेष सतर्कता बरतने का निर्देश दिया है। होली के दौरान विधि-व्यवस्था संबंधित कोई परेशानी न हो। इसके लिए लगभग 10,000 अतिरिक्त बलों की तैनाती गई है। इन्में करीब चार हजार जवान लाठी वाले हैं। इसके अलावा रैपिड एक्शन पुलिस व टीयर गैस के वाहनों को तैनात किया जा रहा है। रांची में 2000 जवान, जमशेदपुर में आरपीए दो कंपनी, आसू गैस दस्ता और 25 लाठी बल और टीजी एक यूनिट, धनबाद में 700 जवान, हजारीबाग में आरएपी 6 और 25 लाठी बल, गिरिडीह में 600 लाठी बल और आरएपी 6 कंपनी, बोकारो में 250 जवान, चतरा में 340 जवान,पलामू में 300 जवान, गोड्डा में 100 जवान, साहिबगंज में 175 जवान, देवघर में 150 जवान, दुमका में 150 जवान, जामताड़ा में 100 जवान, लोहरदगा में 250 जवान, कोडरमा में 200 जवान खुटी में 100 जवान, चाईबासा में 100 जवान, गढ़वा में 100 जवान, सिमडेगा में 100 जवान, मुमला में 100 जवान, लातेहार में 100 जवान, सरायकेला में 100 जवान, पाकुड़ में 100 जवान और रामगढ़ में 100 जवान की अतिरिक्त तैनाती की गई है। आईजी अभियान सह पुलिस प्रवक्ता एवी होमकर ने सोमवार को बताया कि होली को लेकर राज्य में सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं।

उम्माद नहीं फैला सके इसलिए सभी धार्मिक स्थलों की लगातार निगरानी सहित अथैव शराब के विरुद्ध लगातार अभियान चलाने एवं हुड़दंगियों से निपटने हेतु कारगर कदम उठाते हुए विधि-व्यवस्था सुदृढ बनाये रखने सहित जिलों में प्रतिनियुक्त बल को दंगा रोधी संसाधनों से लैस तथा सभी जगहों पर पुलिस बल की प्रतिनियुक्ति तथा ट्रैफिक व्यवस्था सुचारू ढंग से संचालित करने का निर्देश दिया।

राबड़ी देवी से पांच घंटे सीबीआई की पूछताछ

2024 तक यह सिलसिला चलता रहेगा : तेजस्वी



नवप्रदेश संवाददाता

पटना : राष्ट्रीय जनता दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष, पूर्व मुख्यमंत्री और पूर्व रेल मंत्री लालू प्रसाद यादव की पत्नी पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी के आवास पर सोमवार सुबह सीबीआई की टीम पहुंची। करीब 5 घंटे तक राबड़ी देवी से पूछताछ के बाद टीम राबड़ी आवास से बाहर निकली। सीबीआई अधिकारियों से मीडिया ने बातचीत करने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया और चले गए। टीम जमीन के बदले नौकरी केस में पूछताछ कर रही है। इस केस में लालू प्रसाद यादव, राबड़ी देवी और उनकी बेटी मीसा भारती समेत 14 आरोपी हैं। 15 मार्च को लालू प्रसाद, उनकी पत्नी राबड़ी देवी और बेटी मीसा भारती को कोर्ट में पेश होने के लिए कहा गया है। जिस समय टीम पहुंची, राबड़ी देवी विधान परिषद् जाने की तैयारी कर रही थीं। इस मामले में डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव ने कहा कि राबड़ी आवास पर सीबीआई की टीम पूछताछ कर रही है। हम तो निकल गए थे। इसके बाद पता चला कि सीबीआई की टीम पहुंची है। बताया कि जमीन के बदले नौकरी केस में बिहार की पूर्व

मुख्यमंत्री राबड़ी देवी से पूछताछ कर रही है। देखिए, हमलोग तो निश्चित हैं। हर महीने सीबीआई, इंडी और इनकम टैक्स आते रहते हैं। 2024 तक यह सिलसिला चलता रहेगा। इससे हमलोगों को कोई फर्क नहीं पड़ा। जब कोई गलत हुआ नहीं तो उसकी चिंता हमलोगों को नहीं है।

2024 के चुनाव में जनता जवाब देगी

इधर, राबड़ी आवास के बाहर राजद समर्थक धरने पर बैठ गए हैं। उनका कहना है कि लालू प्रसाद सिंगपुर से लौटे हैं। उनकी थोड़ी सी सक्रियता बढ़ी और एक कार्यक्रम में उन्होंने जनता को संबोधित किया। इसके बाद केंद्र सरकार भयभीत हो गई। बिहार में सबलोग होली की तैयारी में लगे हैं और भाजपा वालों उड़ककी टीम भेजी है। संस्थाओं का दुरुपयोग किया है। 2024 के चुनाव में जनता इसका माकूल जवाब देगी। विधान परिषद् सदस्य और उनके मुंहबोले भाई सुनील कुमार सिंह भी वहीं मौजूद थे। लालू के बड़े बेटे तेज प्रताप यादव करीब साढ़े 11 बजे विधानसभा के लिए गाड़ी में बैठकर निकले।

सी. पी. राधाकृष्णन

राजभाषा, झारखण्ड

हेमन्ता सोरेन

मुख्यमंत्री, झारखण्ड

मार्च

अंतरराष्ट्रीय

महिला दिवस

संदेश

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर जारी शक्ति को नज़र और अनेक शुभकामनाएं। महिलाएं आज सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र में अपनी उत्कृष्ट भूमिका निभाती हुई जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नज़रभूरी के साथ आगे बढ़ रही हैं। फिर भी, महिलाओं की सुरक्षा तथा समान अधिकार के लिए अभी भी बहुत कुछ करने की आवश्यकता है। यद्यपि वे सर्वोत्तम हैं, फिर भी महिला उत्प्रेक्षितत्व, महिला शोषण, बाल विवाह प्रथा का भ्रम करने जैसी कई महाकाव्यों उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए कृता संकल्पित सत्य सरकार विभिन्न योजनाओं का संचालन कर रही है। इसके अतिरिक्त टेक्नोलॉजी योजना के माध्यम से डिजिटलियों को तेज़गति पदक प्रशिक्षण उपलब्ध करा कर उन्हें आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

एक बार पुनः राज्य की सभी महिलाओं को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की शुभकामनाएं।

कुल १६ मतदाता निर्वाचन प्रक्रिया संख्या

PR.No.- 292007 (Election) 22-23

सभी झारखण्डवासियों को रंगों के त्योहार

होली

की हार्दिक शुभकामनाएं और जोहार

कुल १६ मतदाता निर्वाचन प्रक्रिया संख्या

PR.No.- 292009 (Election) 22-23

संपादकीय

होली से प्रेम का संदेश

होली शीत ऋतु की विदाई और ग्रीष्म ऋतु के आगमन का सांकेतिक पर्व है। प्रकृति के पावों में पायल की छम-छम बसंत के बाद इस समय पतझड़ के कारण साख़ से पते टूटकर दूर हो रहे होते हैं, ऐसे में परस्पर एकता, लगाव और मैत्री को एकसाथ एक सूत्र में बांधने का संदेशवाहक होली का त्योहार वातावरण को महुए की गंध की मादकता, पलाश और आम की मंजरियों की महक से चमत्कृत कर देता है। फाल्गुन मास की निराली बासंती हवाओं में संस्कृति के परंपरागत परिधानों में आंतरिक प्रेमानुभूति सुसज्जित होकर चहुँओर मस्ती की गंध आलम बिखेरती है, जिससे दुःख-दर्द भूलकर लोग रंगों में डूब जाते हैं। होलिकोत्सव अखिर इंसान के मन की उस इच्छा का बयान ही तो है। उसी के अंदर अलग-अलग रूप में मिलती है। इसे मौज, आनंद, मस्ती, प्रसन्नता, सुख का नाम दिया गया है, जिनकी अभिव्यक्ति हल्ला, हंगामा, उल्लास, उमंग यानी गीत-गान-रंग से होती है, जो इन सबको एक कड़ी में बांधता है। यह उत्सव के उल्लास में आनंद की खोज का पर्व भी है। बहुत कुछ बदला है। रंग बदले, भावनाएं बदलीं, भावना व्यक्त करने के तरीके बदले। परिवेश बदला, इच्छाएं भी बदलीं। सब कुछ बदला, तो तौर-तरीकें भी बदले। लेकिन बहुत कुछ है, जो बदल-बदलकर वापस भी आ रहा है। टेसू फिर से हमारे जीवन में रंग घोलेने लगा है। हर्बल रंगों और गुलाल ने रासायनिक रंगों को परे धकेल दिया है। प्राकृतिक रंग ज्यादा भारने लगे हैं। प्रकृति के रंग हमेशा से ज्यादा सुखित और प्रीतिकर रहे हैं। होली समरसता का संदेश देती है। प्रेम का संदेश देती है। स्वरूप और रंग अलग हों, लेकिन ब्रज से लेकर अवध और मिथिला तक संश्रय एक ही है। होली पर गीत गाने का चलन फसल की आवस्य से उत्पन्न इत्मीनान का प्रतीक है। यह अग्नि की पूजा का पर्व भी है, यानी उस शक्ति की पूजा, जो सर्वशक्तिमान है। और हमें कठों से मुक्ति दे सकती है। ठीक उसी तरह, जैसे होलिका की गोद में बैठे ब्रह्माद को मुक्ति मिली थी। यह नव संस्कृति का प्रस्थान बिंदु भी है। तो क्यों न इस होली को बदले जीवन संदर्भों में नये तरीके से माना जा संकल्प लें? मेल-मिलाप और समरसता के इस त्योहार को मेल-मिलाप और समरसता का प्रतीक बना दें। हम तेजी से ग्लोबल होते गए हैं। हमारा आकाश जितना विशाल हुआ, संवाद भी उतना ही बढ़ा है। इंटरनेट ने दूरी इतनी कम कर दी कि एक क्षणों पर दुनिया हमारी स्क्रीन पर होती है। संसार की इस सहज सुलभता ने कुछ विकृतियां भी दी हैं। जाहिर है, सोशल मीडिया ने हमें जितना करीब किया है, कटुता वोहरक उतना ही दूर भी किया है। यह उस विकृति से मुक्ति पाने का समय भी है। एक बात और, अपने गांव की होली को हम भूलते जा रहे हैं। इस त्योहार की असल परिंपरा का जन्म गांव से ही हुआ है। होली की संस्कृति आज भी गांव में ही जड़ है। इसलिये शहरीकरण से दूर गांव के होलीकोत्सव को याद रखें, उसी को जिएं, अपनी संस्कृति लगातार अपने स्वरूप में चलती रहेगी।

सामयिकी

मिलावटखोरों की सजा ऐसी हो

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

हमारी दो दवा-निर्माता कंपनियों के कारनामों से सारी दुनिया में भारत की बदनामी हो रही है। इस बदनामी से भी ज्यादा दर्दनाक बात यह है कि इन दोनों कंपनियों मेडेन फार्मा और मेरियन बायोटेक की दवाइयों से गाँबिया में 60 बच्चों और उज्बेकिस्तान में 16 बच्चों की मौत हो गई। जब पहले-पहल ये खबरें मैंने अखबारों में देखी तो मैं दंग रह गया। मुझे लगा कि भारत से अरबों रुपये की दवाइयों का जो निर्यात हर साल होता है, उस पर इन घटनाओं का काफी बुरा असर पड़ेगा। भारत की प्रामाणिक दवाइयों पर भी विदेशियों के मन में संदेह पैदा हो जाएगा। हमारी दवाएं अमेरिका और यूरोप की तुलना में बहुत सस्ती होती हैं। मुझे यह भी लगा कि इस मामले ने यदि तुल पकड़ लिया तो एशिया और अफ्रीका के जिन गरीब मरीजों की सेवा इन दवाइयों से होती है, अब वे वंचित हो जाएंगे। हो सकता है कि गाँबिया और उज्बेकिस्तान के उन बच्चों की मौत का कारण कुछ और रहा हो। लगभग दो माह पहले जब ये खबरें आईं तो यह भी अपुष्ट सूत्रों ने कहा कि इन दवाइयों के नमूनों की जांच यहीं की गई है और वे ठीक पाई गई हैं लेकिन इन देशों के जांचकर्तों ने उन अब जांच पूरी होने पर कहा है कि इन दवाइयों में कुछ नकली और हानिकार तरलों को मिला देने के कारण ही ये जानलेवा बन गई थीं। इस निष्कर्ष की पुष्टि अब एक अमेरिकी एक जांच कंपनी ने भी कर दी है। भारत सरकार ने इन कंपनियों के खिलाफ पुलिस में रपट लिखवा दी है और उनके कुछ कर्मचारियों को गिरफ्तार भी कर लिया है लेकिन दोनों कंपनियों के मालिक और वरिष्ठ प्रबंधक फरार हैं। यदि उनको विश्वास है कि उनकी दवाइयों में कोई मिलावट नहीं की गई है तो उन्हें डरने की जरूरत क्या है? यह भी हो सकता है कि मालिकों और मैनेजर्स की जानकारी के बिना भी मिलावट की गई होगी। यदि ऐसा है तो उन कर्मचारियों को कठोरतम सजा दी जानी चाहिए और यदि मालिक और प्रबंधक भी इस जानलेवा मिलावटखोरी के लिए जिम्मेदार हैं तो उनकी सजा तो और भी सख्त होनी चाहिए। इन लोगों पर दस-बीस लाख या करोड़ रुपये का जुमाना बेमतलब होगा। इन सबको 76 बच्चों की सामूहिक हत्या का जिम्मेदार मानकर इनकी सजा भी इतनी भयंकर होनी चाहिए कि भावी मिलावटखोरों की नींद हराम हो जाए। यह सजा जल्दी से जल्दी दी जानी चाहिए ताकि आम लोगों को पता चले कि किस कुकर्म्म के लिए उन्हें दंडित किया गया है। उन्हें जेल के बंद दरवाजों के पीछे नहीं, चौराहों पर लटकाया जाना चाहिए और हर टीवी चैनल पर उसका जीवंत प्रसारण किया जाना चाहिए। उसके बाद आप देखेंगे कि देश में किसी भी तरह के मिलावटखोर आपको दूँदने से भी नहीं मिलेंगे।

(लेखक, भारतीय विदेश परियोजना के अध्यक्ष हैं।)

प्रभुनाथ शुक्ल

वसंत
लगते ही रंगत
बदल जाती थी।
फागुन में होने
वाली शादी में
दूल्हा और बाराती
रंगों में नहा उठते
थे। होली के दिन
गुड़ में भांग
मिलाकर महजूम
बनाए जाते थे।
भांग मिश्रित ठंडई
बनती थी। बचपन
में हम लोग उसे
पीकर होली के
हुडदंग में
शामिल हो जाते।
यह सब वसंत
लगते ही शुरू हो
जाता था।

खतों में फसलों की रंगत बदल गई है। सरसों में पत्ते फूल खत्म हो गए हैं। हरसों की फलियाँ से गढ़ाई गई है। मटर और जौ की बालियाँ सुनहरी पड़ने लगी हैं। जवान टंडुल अब बूढ़ी हो गई है। हल्की पछुवा की फलन गुनगुनी धूप थोड़ा तीखी हो गई है। घास पर पड़ी मोँगियों सीखी आँस की बूँदें सूर्य की किरणों से जल्द सिमटने लगी हैं। प्रकृति के इस बदलाव के साथ फागुन ने आहिस्ता-आहिस्ता कदम बढ़ा दिया है। प्यूस, गेंदा और गुलाब फागुन की मस्ती में खिलखिला रहे हैं। अमरावत में आम में लगे बौरों की मादकता अजीब गंध फैला रही है।

भर्रर कलियों का रसपान कर वसंत के गीत गुनगुना रहे हैं। पेड़ों से पत्ते रिश्ते तोड़ वसंत के स्वगतन में धरती पर बिछ जाने को आतुर हैं। प्रकृति और उसका एहसास फागुन के होने की दस्तक देता है। लेकिन इंसान बिल्कुल बदल चुका है। वह फागुन को जीना नहीं चाहता है। वह प्रकृति से साहचर्य नहीं रखना चाहता है। वह उसे भी जीतना चाहता है। खुद निर्यत बनाना चाहता है। शायद यहीं उसकी भूल है। फागुन में भौझाई की टिडोली और मसखरी जीन कहां खो गईं। फागुन के गीतों पर डोल-मंजरी की थाप सुनाई नहीं देती। पूर्वोच्चल में फागुन के गीत फगुवा को गाने वाले लोग गायब हैं। अश्लील और गंद भोजपुरिया गीतों का राज है। फगुन गीत प्रकृति से जुड़े होते थे। लेकिन आजकल



आरके सिन्हा

देश के अधिकतर भागों में होली की तरह से लोकआस्था के पर्व छठ के संबंध में भी जानकारी भी पहले न के बराबर थी। पर गुजरे बीस-पच्चीस सालों के दौरान स्थितियां बदल गईं। क्योंकि, बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश के लाखों नौजवान सारे देश में कामकाज के लिए जाने लगे। अब छठ का पर्व दिल्ली से मुंबई तक में सभी जगह बहुत भव्य तरीके से मनाया जाता है।



रावेल पुष्प

मैं अभी सोच ही रहा था, तभी मेरे पास खड़े बेटे सदीप ने बताया कि ये एक मल्टी परंपरा वायस मेल था। आजकल कुछ सर्विस प्रोवाइडर कंपनियाँ ऐसी सर्विस दे रही हैं। आप अपने नम्बर पर जरूरत के अनुसार भरवा लें- सौ रसगुल्ले, पचास गुलाब जामुन, पचास गुड़िया कुछ जलेबियाँ वगैरह सबके अलग-अलग रेट हैं।

कोरोना के कारण दो-तीन सालों तक जनघड़कन के पर्व होली का रंग पीका सा पड़ने लगा था। होली मिलन समारोहों पर भी विराम सा लग गया था। पर इस बार लगता है कि देश सौत्विक को पुराने अंदज में मानने का रहा है। होली के रंग फिजाओं में बिखरे हैं। कहीं गुलाल और गुजिया को खुशबू को तो कहीं दही बड़ा और मालपुआ के अनोखे स्वाद को हर तरफ महसूस किया जा रहा है। होली मिलन समारोहों की वापसी हो चुकी है। इनके आयोजन लखनऊ से रायपुर, मुम्बई तथा पटना से दिल्ली वगैरह में सभी जगह हो रहे हैं। सब एक-दूसरे से गले मिल रहे हैं। गिले-शिक्वे भुलाए जा रहे हैं। यही मौका है कि जब विभिन्न दलों के तमाम राजनीतिक नेता भी अपने मतभेद भुलाकर एक साथ होली खेलें और राष्ट्र निर्माण में लग जायें। अखिर यह देश तो सबका है। राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी भी सबकी ही है।

जन्मदात्री भी सबकी हो है। एक देर की जब होली पर अटल बिहारी वाजपेयी के आवास पर भव्य होली मिलन का कार्यक्रम आयोजित होता था। उसमें तमाम राजनीतिक कार्यकर्ता, नेता, लेखक, पत्रकार, कवि आदि भाग लेते थे। अटल जी खुद सबसे अधिकतम की प्रशान लगाना करते थे। उसमें देश के मौजूदा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी भाग लेते थे। वे तब भाजपा के संगठन से जुड़े हुए थे। इस अवसर पर सुखादु गुजिया और स्वामीदेव भोजन की व्यवस्था रहती थी। अटल जी के घर पर होने वाले होली मिलन की सारी व्यवस्था उनके आत्मीय सहयोगी शिव कुमार अहि किया करते थे। वे अटल जी के घर के स्थानीय चेहरा थे। वे अटल जी के 111 साथी एवैन्यू, 6 रायसीनारोड, फिर लोक कल्याण मार्ग स्थित प्रधानमंत्री आवास और अंत में 6-ए कृष्ण मेन मार्ग के घरों में सुबह से देर शाम या रात तक रहा करते थे। अटल जी राजधानी के इन सब घरों में लगभग छह दशकों तक रहे थे। अटल जी के घरों में होने वाले कवि सम्मेलनों और होली मिलन के आयोजनों के शामिल होने के लिए आने वाले अतिथियों के लिए शिव कुमार पारीख जी चांदनी चौक के घंटे वाले या गोल मार्केट के बंगला स्वीट हाउस की बालूशाही अवश्य मंवाते। अटल जी का व्यक्तित्व भी तो बेहद उदार और विराट था। वे सर्वप्रिय थे। भाजपा के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी के पृथ्वीराज रोड स्थित आवास पर भी होली बड़े प्रेम से



होली जाती रही है। आडुवाणी जी के घर भी होली का रंग शालीनता के दायरे में ही रहता है। आडुवाणी जी जब राजधानी के पंडारा पार्क में रहते थे तब वहां पर भी होली काफ़ेदे से मनाई जाती थी। होली पर पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के सस्कारी आवास १, सफ़दरजंग रोड के गेट भी सबके लिए खुल जाते थे। इंदिरा गांधी मेहमानों को स्थाई मिठाइयां खिलावाती थीं। पर १९८० के बाद इंदिरा जी के होली मिलन पहले की तरह भव्य नहीं रहे। गेट थे सुरक्षा कार्पोन के चलते। तब तक पंजाब में आतंकवाद ने अपनी जड़ें जमा ली थीं। इंदिरा जी के होली मिलन की व्यवस्था उनके सचिव आर.के.धवन देखते थे। धवन साहब से पहले इंदिरा जी और उससे भी पहले उनके पिता नेहरू जी के तीन मंजूर आवास पर होली मिलन हरिवंश राय बच्चन और तेजी बच्चन की देखरेख में होते थे। राजधानी में लालू यादव तथा राम विलास पासवान के होली मिलन को लेकर भी बहुत उत्साह का वातावरण बन जाया करता था। अब राजनीतिक नेताओं के होली मिलन समाजहों की किफ़ायतें ही शेप हैं। उन्हें फिर से आर्थोजित किया जाना चाहिए। होली अपने आप में एक असाधारण पहलू है। यह जपति, धर्म, संप्रदाय की दीवारों को ध्वस्त करता है। इसके मूल में समतावादी समाज की प्रकल्पना है। देश के राष्ट्रपति के रूप में डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने सन २००३ में नार निगम और राष्ट्रपति भवन परिसर के स्कूलों

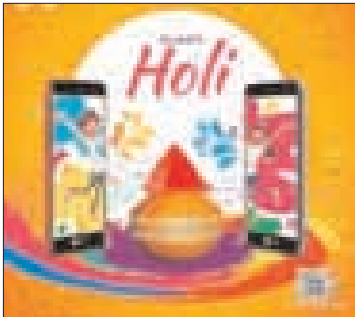
के लगभग 1200 बच्चों के साथ होली मनाई थी। डॉ. कलाम लगभग दो घंटे तक इन बच्चों के साथ रहे। उन्हें शुभकामनाएं दी और उनसे शुभकामनाएं ली। देश के प्रथम राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद भी होली पर राष्ट्रपति भवन के स्टाफ के साथ होली खेलते थे और उन्हें अपने वेतन के पैसे से ही उपहार दिया करते थे। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जैसे नेता बार-बार नहीं जन्म लेते। उन्होंने 11 मई 1950 को सोमनाथ मंदिर में तमाम विरोधों के बावजूद शिवलिंग की मंदिर परिसर में स्थापना की थी। उनके तब सोमनाथ मंदिर में जाने का प्रथम उन्ने नेहरू ने भी घोर विरोध किया था। जो लोग राजेन्द्र बाबू के सोमनाथ मंदिर में जाने को बार-बार मुद्दा बनाते हैं, उन्हें पता होना चाहिए—उन्हीं की पहल पर राष्ट्रपति भवन परिसर के भीतर मंदिर और मस्जिद दोनों का ही निर्माण हुआ था। चूँकि राष्ट्रपति भवन से सटे ही हैं नाथ एवेन्यू चर्च और गुटबारा रकाबगंज, इसलिए इनके राष्ट्रपति भवन परिसर में निर्माण की जरूरत महसूस नहीं की गई होगी। जिस वायसराय हाउस का डिजाइन एडवर्ड लुटिंस ने बनाया था उसमें मंदिर-मस्जिद के लिए कोई जगह नहीं थी।

राजेन्द्र बाबू होली, दिवाली, ईद, क्रिसमस, बाबा नानक जयंती आदि अवसरों पर राष्ट्रपति भवन के स्टाफ के बच्चों से भी मिलते थे। लोकतंत्र में देश के सर्वोच्च पद पर आसीन व्यक्ति और आमजन के बीच दूरियां नहीं होनी चाहिए। इसलिए यह आवश्यक है कि फिर से

होली मिलन के कार्यक्रम होते रहें। उनमें सबकी भागीदारी रहे। सुखद यह है कि इस वषारवापसी हुई है। देश के लगभग सभी शहरों में होली का रंग उमर चुका है। कुछ साल पहले तक होली के संबंध में दक्षिण तथा पूर्वोत्तर क राज्यों में जानकारी बहुत कम थी। पर जब से उमर भारत के युवा नौकरी करने के लिए चेन्नई, हैदराबाद, पुणे तथा बेंगलुरु में हरा साल हजारों की संख्या में जाने लगे हैं, तब से दक्षिण भारत को भी होली के बारे में घोर दिलचस्पी दिखने लगी है। अब होली सोनपुर और वृन्दावन तक ही सीमित नहीं रही। यह देश के हर कोने में धूमधाम से मनाईजाती है। देश के अधिकतर भागों में होली की तरह से लोकआस्था के पर्व छठ के संबंध में भी जानकारी भी पहले न के बराबर थी। पर गुजरे बीस- पच्चीस सालों के दौरान स्थितियां बदल गयीं। क्योंकि, बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश के लाखों नौजवान सर देश में कामकाज के लिए जाने लगे। अब छठ का पर्व दिल्ली से मुंबई तक में सभी जगह बहुत भव्य तरीके से मनाया जाता है। एक समय था जब लोहड़ी तथा कार्वाचोथ मुख्य रूप से पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली वगैरह में ही मनाए जाते थे। इन्हें अखिल भारतीय पहचान मिली बॉलीवुड फिल्मों से। बहरहाल, होली के रंगों से रंगने के लिए आज सारा देश तैयार है।

(लेखक, वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार और पूर्व सांसद हैं।)

त्यंग : मोबाइली होली



रूप नजर दौड़ाता हूँ तो मुझे बड़ी हैरानी होती है कि प्रभु पृथ पर मात्र एक बड़ा सा विज्ञापन छपा था, जो किन्हीं मशहूर ज्वेलरी कंपनी का था। खैर, मैं उससे ही बुदबुदाते हुए पढ़ने लगा था- इस होली के मौके पर अभूषण बिल्कुल सस्ते! चूने-दाल का हार इस हजार रुपये, मरूप दाल के जड़ाऊ कमरे जोड़ा आठ हजार रुपयों में दाल की नाक की लॉग सिप्पन इन्क्की हजारा रुपए! मैं अभी विज्ञापन पढ़कर बुदबुदा ही रहा था कि कि सोंई घर में खड़ी श्रीमती जी के कान में पता नहीं कैसे ये आवाज पहुंच गई और वो सामने नम्रुद्ध हो गई- क्यों जी, मेरा नाना की लॉग पहनने का किताम नम करता है और तुम हो कि बस टालते रहते हो। अरे भई तुम्हारे पास तो हीरे के लॉग है, वही अभी तुम्हारे उंगलियों पर गिन कर पहनी होगी- मैंने उस सप्पाते हुए कहा। बस इतना भर कहना था कि वो तो जैसे हथके से उखड़

ई - आपकी आजकल के रिवाज का कुछ पता भी है। आजकल सोने और हीरे के गहने बना पहनना कौन है? ये सब तो अब अटॉल फेशन हो गए हैं। अपने वो जम्बल वॉर जी हैं न, उनकी वाइफ मिसेज रतिन्दर जम्बल उस दिन कन्नड़ी पार्टी में मूंग की दाल की लॉग हो तो पहन कर आई थीं। सारी जनाजाना बस गेम वगैरह छोड़कर उसकी नाक की लॉग हो तो देख रही थीं। हाथे की कितो तो सुन्दर लग रही थीं वो और फिफे वो पंजाबी गीत भेरी लॉग दा लशकारा पर कितना तो बन-बन कर ठुमक रही थीं। अरी भागवान, मैं ठहरा नौकरी पेसा आदमी और थोड़ा बहुत लिखने-पढ़ने से पैसा आ जाता है, पर उनके पास तो कानाडा का पैसा है। वैसे आजकल मूंग की दाल की लॉग पहनना हर किसी के बस के बूते की बात नहीं। वो जमाना गया, जब हमारे दादा परदादा दाल खाया करते थे और कहते थे— खाइए दाल, जेहड़ी प्रभुसे नाद! या फिर दाल रोटी खाओ, प्रभु के गुण गाओ! अब तो जिसके पास दाल के दाने हैं, वो घर में रखने से भी डरता है। बैंकों के लाकर खोलो तो दाल के दाने ही निकलते हैं। पहले तो जो लोग अमीर होते थे वे लखपति, करोड़पति कहलाते थे, और अब तो दालपति कहलाने में फख महसूस करते हैं।

मैं अभी अखबार का आलता पृष्ठ पलटता तभी मेरे मोबाइल की घंटी बजी। मैंने मोबाइल कान से लगाया तो उधर से

आवाज आई - मैं रवि प्रताप सिंह बोल रहा हूँ, आपको होली बहुत मुबारक हो। इतना कहने के बाद ही उसकी लम्पमा चिल्लाती हुई आवाज आई- होली है, होली है। और मैं देखा कि मेरे मोबाइल स्क्रीन से रंगों की बौछार होने लगी और फिर कई तरह के फूलों की सुगंध हमारे मन में बिखर गई। मैंने देखा तो मेरे मोबाइल के स्क्रीन पर पहले तरह-तरह के फूल और फिर एक-एक कर मिठाइयों के चित्र सामने आने लगे। कमरा मिठाइयों की गंध से भर गया और मैंने तो गंध अंदर तक भर ली। मुझे साफ एहसास हुआ कि मैंने तो मिठाइयाँ खा ली हैं।

मैं अभी सोच ही रहा था, तभी मेरे पास खड़े बड़े सदीप ने बताया कि ये एक मल्टी पंचपास वायस मेल था। आजकल कुछ सर्विस प्रोवाइडर कंपनियाँ ऐसी सर्विस दे रही हैं। आप अपने नम्बर पर जरूरत के अनुसार अपना लें- सी रसगुल्ले, पचास गुलाब जामुन, पचास गुड़िया कुछ जिलेबियाँ वगैरह सबके अलग- अलग रूट हैं। फिर होली के मौके पर अपने दोस्तों, रिश्तेदारों को इसी तरह के वायस मेल से भेज दें। है न मजेदार, ठो झूट। तो फिर देर किस बात की, आप भी अपने मोबाइल में भनपावें मिठाइयाँ। फिर घर बैठे आराम से खेलें - मोबाइली होली!

(लेखक, वरिष्ठ पत्रकार हैं।)

आओ थोड़ा सा तुम फागुन हो जाओ



के गाँवों में सिर्फ अश्लीलता है। सभ्य समाज में ऐसे गीत सुनने लायक भी नहीं है। सभ्य के साथ सब कुछ बदल रहा है। यह बदलाव तथ्य और अर्थहीन है। फागुन प्रकृति का रंगोत्सव है। फागुन में प्रकृति बदल जाती है। वह मलंग हो जाती है। उसमें अजीब मादकता आ जाती है। फागुन और वसंत के जरिए प्रकृति हमें संदेश देती है कि जिस प्रकार मैं

विविधताओं से भरी हूँ उसी तरह मानव जीवन में भी रंगों की विविधताएं हैं। सुख-दुःख, हर्ष, विषाद, उल्लास, उत्सव भी जीवन के अपने रंग हैं। इसको खुल कर जीना चाहिए। फागुन जैसा जीना चाहिए। प्रकृति हमें संतुलन ही नहीं संतुष्टि भी सिखाती है। अफसोस हम उसके संदेश को पढ़ नहीं पाते हैं। जब पढ़ने की कोशिश करते हैं तो फागुन यानी वसंत

जुजर गया होता है और हम पतझड़ को लेकर फिर परेशान हो जाते हैं। ऐसा इसलिए कि हम सिर्फ वसंत को जीना चाहते हैं। पतझड़ को नहीं।

माघ-फागुन के मौसम में चरखी से निकले गन्ना के रस में दही मिला सीखरन तैयार होता था। फिर मटर की सलोनियों के साथ उसे पीने का आनंद और स्वाद ही अलग था। अब गांवों से गन्ने की खेती गायब हो

लीती है। कड़ाहे गुड़ और खांड की सोधी गंध नाक को तृप्त नहीं करती। वह वक्त भी था जब पकती खांडों में हम आलु डालते जाते तो दादा की खूब डांट मिलती। लेकिन समय कुछ बदल गया है। अब गांव में कंकरीट के जंगल में तब्दील हो चुके हैं। घनाद्यों ने कई मंजिला इमारतें खड़ी कर शहरी अर्धजात्य संस्कृति का आगाज किया है। घरों में मिट्टिमाती ढेबरी के जगह एलईडी नॉनवर्टर के प्रकाश ने ले लिया है। कभीझाकभी मिट्टी का तेल यानी केरोसिन न मिलने से दादी और अम्मा कड़ुवा कहला का दीपक जलाती थीं। अब यहाँ तक कहानियाँ हो गई हैं। प्रकृति में अरेहड़ फागुन जीवंत है लेकिन बदली परम्पराओं और हमारी सोच में वह बूढ़ा हो चला है। फागुन में रास है न रास। अब हाली के नाम पर औपचारिकता है। बस गाँवों पर गुलाल मलने की सिर्फ रस्म निभाई जाती है जबकि दिल नई मिलते। गाँवों में फागुन वाली भीजाई गायज है। रास कच्चे मकान होते थे तो भीजाई और घर की ओरतें भाई-गोबर लगाती थीं। पूर्वांचल में गांव की भाषा में इसे गोबरी कहते हैं। गोबरी लगाते वक्त अगर कोई देवर उधर से गुजरता था तो भीजाई दौड़ा कर मुँह और कपड़े में गोबरी लगा फागुन और हाली के हुडदंग का आगाज करती थीं। देवर भी भीजाई को छेड़ने के मौके तलाशते थे। टेलियों के साथ हाली मानी थी। वक्त के साथ गांव की हाली भी परती

रहकर बदल गई है। होली में आजकल हुड़दंग गायब है। होली के उस हुड़दंग में एक उल्लास और अपमान था लेकिन उसका कुछ सिमेटा जा रहा है। अब तो रंग उल्लसव का त्योहार होली दिखावटी और बनावटी हो गया है।

बनते-लगे ही रंगत बदल जाती थी। फागुन में होने वाली शदी में दुल्हा और बाराती रंगों में नहा उठते थे। होली के दिन गुड्डू भांग मिलाकर महजूम बनाए जाते थे। भांग मिश्रित ठंडई बनती थी। बचपन में हम लोग उस पीकर होली के हुड़दंग में शामिल हो जाते। यह सब वसंत लगे ही शुरू हो जाता था। लेकिन अब न वह देवर हॉल न भोजाई। वसंत पंचमी के दिन से होलिका संग्रह होने लगता। बचपन में युवाओं में होलिका को लेकर खास उत्साह होता। जिस दिन होलिका दहन होता उस दिन दादी उज्ज्वल और तेल की माता उर उसकी लिंजी यानी मैल होलिका में डलवाती थी। लेकिन अब उस तरह के रिवाज गायब हैं। होलिका दहन अब औपचारिक हो चला है। लौहारों की मिठास खत्म हो चली है। आपसी प्रेम और स्नेह सौहार्द गायब है। फागुन एक सोच है। वह जिंदगी को खुशगवार और सफरंग बनाने का संकेत है। वह उमीदों की नई कोपल है। लेकिन वक्त इतनी तेजी से बदला की फागुन और उसकी ठिठोली खुद को तलाश रही है।

(लेखक, स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)



राग-रंग का लोकप्रिय पर्व होली

होली भारत का प्रमुख त्योहार है। होली जहाँ एक ओर सामाजिक एवं धार्मिक त्योहार है, वहीं रंगों का भी त्योहार है। बाल-वृद्ध, नर-नारी सभी इसे बड़े उत्साह से मनाते हैं। इसमें जातिभेद-वर्णभेद का कोई स्थान नहीं होता। इस अवसर पर लकड़ियों तथा कड़ों आदि का ढेर लगाकर होलिकापूजन किया जाता है फिर उसमें आग लगायी जाती है। पूजन के समय मंत्र उच्चारण किया जाता है।

होली खेलने से पहले इन बातों का रखें ध्यान!

रंगों और खुशियों के त्योहार होली के रंग में सराबोर होने के लिए घर से निकलने से पहले आपको त्वचा और बालों की सुरक्षा के संबंध में कुछ बातों का खयाल जरूर रखना चाहिए, जिससे आपको किसी प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पड़े, त्वचा विशेषज्ञ ने होली खेलने निकलने से पहले त्वचा की देखभाल के संबंध में ये सुझाव दिए हैं -

- कुछ लोग होली खेलने के पहले बाल यह सोचकर नहीं धुलते हैं कि रंग खेलने से बाल गंदे होने ही हैं, लेकिन पहले से गंदे बाल में रंग लगने से आपके बालों को और नुकसान पहुंच सकता है और बाल रुखे हो सकते हैं, इसलिए बाल धुलकर, सुखाने के बाद बालों में अच्छी तरह से तेल लगाकर ही होली खेलने निकलें।
- होली खेलने निकलने से पहले सनस्क्रीन क्रीम लगाना नहीं भूलें, क्योंकि तेज धूप में आपकी त्वचा झुलस सकती है और रंग काला पड़ सकता है।
- बाजार में उपलब्ध सिंथेटिक रंगों में हानिकारक केमिकल और शीशा भी हो सकता है, जिससे आपकी त्वचा और आंखों को नुकसान पहुंच सकता है। इसलिए त्वचा और बालों पर अच्छे से तेल लगाएं और हो सके तो प्राकृतिक रंगों या घर पर बने टेसू के फूल वाले रंग से होली खेलें। कानों के पीछे, उंगलियों के बीच में भी तेल अच्छे से लगाएं और नाखूनों पर नेल पॉलिश लगाना नहीं भूलें। बालों में नारियल तेल डालकर अच्छे से मसाज करें, इससे

- आपके बाल रुखे भी नहीं होंगे।
- शरीर के अधिकांश हिस्सों को रंगों से बचाने के लिए पूरी आरस्तीन के कपड़े पहनें, सूती रंग के ही कपड़े पहनें, क्योंकि भीगने पर सिंथेटिक कपड़े शरीर से चिपक जाते हैं और आपको उलझन महसूस हो सकती है।
- फलों और सब्जियों के छिलकों को सुखाकर उसमें टैल्कम पाउडर और संतरे के सूखे छिलकों के पाउडर को मिलाकर होली खेलना एक अच्छा विकल्प है। इसमें हल्दी पाउडर, जिंजर रूट पाउडर व दालचीनी पाउडर भी मिलाए जा सकते हैं, जो आपकी त्वचा के लिए हानिकारक साबित नहीं होंगे, लेकिन इन पाउडर को जोर से त्वचा पर मले नहीं, क्योंकि इससे लालिमा, खरोंच या दांते पड़ सकते हैं और त्वचा में जलन हो सकती है।
- होली खेलने के बाद सौम्य फेसवॉश या साबुन का ही इस्तेमाल करें, क्योंकि हार्श साबुन से त्वचा रूखी हो सकती है, नहाने के बाद मॉइश्चराइजर और बॉडी लोशन जरूर लगाएं।
- बालों को सौम्य हर्बल शैम्पू से अच्छी तरह धुलें, ताकि अश्रु युक्त और केमिकल वाले रंग बालों से अच्छी तरह से निकल जाएं, शैम्पू के बाद बालों का रुखापन दूर करने के लिए एक मग पानी में एक नींबू का रस मिलाकर धुलें या फिर बीयर से भी बाल धुला जा सकता है, इससे आपके बाल मुलायम रहेंगे।

होली वसंत ऋतु में मनाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण भारतीय और नेपाली लोगों का त्योहार है। यह पर्व हिंदू पंचांग के अनुसार फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। रंगों का त्योहार कहा जाने वाला यह पर्व पारंपरिक रूप से दो दिन मनाया जाता है। यह प्रमुखता से भारत तथा नेपाल में मनाया जाता है। यह त्योहार कई अन्य देशों जिनमें अल्पसंख्यक हिन्दू लोग रहते हैं वहां भी धूम-धाम के साथ मनाया जाता है। पहले दिन को होलिका जलायी जाती है, जिसे होलिका दहन भी कहते हैं। दूसरे दिन, जिसे प्रमुखतः धुलेंडी व धुरड्डी, धुरखेल या धूलिवंदन इसके अन्य नाम हैं, लोग एक दूसरे पर रंग, अबीर-गुलाल इत्यादि फेंकते हैं, ढोल बजा कर होली के गीत गाये जाते हैं और घर-घर जा कर लोगों को रंग लगाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि होली के दिन लोग पुरानी कटुता को भूल कर गले मिलते हैं और फिर से दोस्त बन जाते हैं। एक दूसरे को रंगने और गाने-बजाने का दौर दोपहर तक चलता है। इसके बाद स्नान कर के विश्राम करने के बाद नए कपड़े पहन कर शाम को लोग एक दूसरे के घर मिलने जाते हैं, गले मिलते हैं और मिठाइयाँ खिलाते हैं। राग-रंग का यह लोकप्रिय पर्व वसंत का संदेशवाहक भी है। राग अर्थात संगीत और रंग तो इसके प्रमुख अंग हैं ही पर इनको उत्कर्ष तक पहुँचाने वाली प्रकृति भी इस समय रंग-बिरंगे यौवन के साथ अपनी चरम अवस्था पर होती है। फाल्गुन माह में मनाए जाने के कारण इसे फाल्गुनी भी कहते हैं। होली का त्योहार वसंत पंचमी से ही आरंभ हो जाता है। उसी दिन पहली बार गुलाल उड़ाय़ा जाता है। इस दिन से फाग और धमार का गाना प्रारंभ हो जाता है। खेतों में सरसों खिल उठती है। बाग-बगीचों में फूलों की आकर्षक छटा छा जाती है। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी और मनुष्य सब उल्लास से परिपूर्ण हो जाते हैं। खेतों में गेहूँ की बालियाँ झटलाने लगती हैं। बच्चे-बूढ़े सभी व्यक्ति सब कुछ संकोच और रूढ़ियों भूलकर ढोलक-झाँझ-मंजीरों की धुन के साथ नृत्य-संगीत व रंगों में डूब जाते हैं। चारों तरफ़ रंगों की फुहार फूट पड़ती है। होली के दिन आग्र मंजरी तथा चंदन को मिलाकर खाने का बड़ा माहात्म्य है।

विशिष्ट उत्सव

भारत में होली का उत्सव अलग-अलग प्रदेशों में भिन्नता के साथ मनाया जाता है। ब्रज की होली आज भी सारे देश के आकर्षण का बिंदु होती है। बरसाने की लटमार होली काफी प्रसिद्ध है। इसमें पुरुष महिलाओं पर रंग डालते हैं और महिलाएँ उन्हें लाठियों तथा कपड़े के बनाए गए कोड़ों से मारती हैं। इसी प्रकार मथुरा और वृंदावन में भी 15

दिनों तक होली का पर्व मनाया जाता है। कुमाऊँ की गीत बैठकी में शास्त्रीय संगीत की गोष्ठियाँ होती हैं। यह सब होली के कई दिनों पहले शुरू हो जाता है। हरियाणा की धुलंडी में भाभी द्वारा देवर को सताए जाने की प्रथा है। बंगाल की दोल जात्रा चैतन्य महाप्रभु के जन्मदिन के रूप में मनाई जाती है। जलूस निकलते हैं और गाना बजाना भी साथ रहता है। इसके अतिरिक्त महाराष्ट्र की रंग पंचमी में सूखा गुलाल खेलने, गोवा के शिमगो में जलूस निकालने के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन तथा पंजाब के होला मोहल्ला में सिक्खों द्वारा शक्ति प्रदर्शन की परंपरा है। तमिलनाडु की कमन पोडिगई मुख्य रूप से कामदेव की कथा पर आधारित वसंतोत्सव है जबकि मणिपुर के याओसांग में योगसांग उस नन्हीं झोंपड़ी का नाम है जो पूर्णिमा के दिन प्रत्येक नगर-ग्राम में नदी अथवा सरोवर के तट पर बनाई जाती है। दक्षिण गुजरात के आदिवासियों के लिए होली सबसे बड़ा पर्व है, छत्तीसगढ़ की होरी में लोक गीतों की अद्भुत परंपरा है और मध्यप्रदेश के मालवा अंचल के आदिवासी इलाकों में बेहद धूमधाम से मनाया जाता है भगोरिया, जो होली का ही एक रूप है। बिहार का फगुआ जम कर मौज मस्ती करने का पर्व है और नेपाल की होली में इस पर धार्मिक व सांस्कृतिक रंग दिखाई देता है। इसी प्रकार विभिन्न देशों में बसे प्रवासियों तथा धार्मिक संस्थाओं जैसे इस्कॉन या वृंदावन के बांके बिहारी मंदिर में अलग अलग प्रकार से होली के श्रृंगार व उत्सव मनाने की परंपरा है जिसमें अनेक समानताएँ और भिन्नताएँ हैं।

आधुनिकता का रंग

होली रंगों का त्योहार है, हँसी-खुशी का त्योहार है, लेकिन होली के भी अनेक रूप देखने को मिलते हैं। प्राकृतिक रंगों के स्थान पर रासायनिक रंगों का प्रचलन, भांग-टंडाई की जगह नशेबाजी और लोक संगीत की जगह फ़र्लमी गानों का प्रचलन इसके कुछ आधुनिक रूप हैं। लेकिन इससे होली पर गाए-बजाए जाने वाले ढोल, मंजीरों, फाग, धमार, चैती और दुमरी की शान में कमी नहीं आती। अनेक लोग ऐसे हैं जो पारंपरिक संगीत की समझ रखते हैं और पर्यावरण के प्रति सचेत हैं। इस प्रकार के लोग और संस्थाएँ चंदन, गुलाबजल, टेसू के फूलों से बना हुआ रंग तथा प्राकृतिक रंगों से होली खेलने की परंपरा को बनाए हुए हैं, साथ ही इसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान भी दे रहे हैं। रासायनिक रंगों के कुप्रभावों की जानकारी होने के बाद बहुत से लोग स्वयं ही प्राकृतिक रंगों की ओर लौट रहे हैं। होली की लोकप्रियता का विकसित होता हुआ अंतर्राष्ट्रीय रूप भी आकार लेने लगा है। बाज़ार में इसकी उपयोगिता का अंदाज़ इस साल होली के अवसर पर एक अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठान केन्जोआमूर द्वारा जारी किए गए नए इत्र होली है से लगाया जा सकता है।

होलिका दहन और धुलेंडी का पर्व कब है, 6, 7 या 8 मार्च को?

होलिका दहन को लेकर कण्यून है, 6 को, 7 को या 8 मार्च को? होली के बाद कब रहेगी धुलेंडी। ज्योतिष मान्यता के अनुसार कब होना चाहिए होलिका दहन और कब मनाएँ धुलेंडी का पर्व? इसके बाद रंगपंचमी का त्योहार कब रहेगा।
कब जलाते हैं होली : पूर्णिमा के दिन प्रदोष काल में होलिका दहन किया जाता है और उसके दूसरे दिन धुलेंडी का पर्व मनाया जाता है।
पूर्णिमा तिथि : पूर्णिमा तिथि 06 मार्च दिन सोमवार को शाम 04:17 पर आरंभ होगी और इस तिथि का समापन 07 मार्च दिन मंगलवार को शाम 06:09 पर होगा।
6 मार्च : 06 मार्च को प्रदोष काल में पूर्णिमा तिथि है लेकिन 7 को पूर्णिमा तिथि में प्रदोष काल नहीं रहेगा। कई जगहों पर पंचांग भेद के कारण 06 मार्च को होलिका दहन होगा, क्योंकि इसी दिन प्रदोष काल में पूर्णिमा तिथि रहेगी।
7 मार्च : 06 मार्च को पूर्णिमा तिथि के प्रारंभ होने के साथ ही भद्रा भी शुरू हो जाएगी जो 07 मार्च सुबह 05:15 तक रहेगी। कुछ लोग भद्रा में होलिका दहन नहीं करना चाहते हैं। अन्य मतानुसार पूर्णिमा तिथि दो दिन प्रदोष व्यापिनी हो तो दूसरे दिन दहन किया जाता है। यानी 07 मार्च को शाम को या रात्रि में होलिका दहन होगा।
धुलेंडी : धुलेंडी का पर्व अगले दिन मनाया जाएगा। अधिकतर मतानुसार 07 मार्च को होलिका दहन होगा और 08 मार्च को होली खेली जाएगी। यानी धुलेंडी मनाई जाएगी।

क्या है होली और राधा-कृष्ण का संबंध

होली के पर्व का जिक्र आते ही मन रंगों से खेलने लगता है और प्रेम के इस पर्व में हर कोई राधा व कृष्ण हो जाना चाहता है। आप सोच रहे होंगे कि राधा व कृष्ण का होली से क्या नाता है तो आइये जानते हैं। होली और राधा-कृष्ण का क्या संबंध है। भगवान विष्णु ने जितने भी अवतार धारण किये हैं चित्रों के माध्यम से उन्हें सांवले रंग का दिखाया जाता है और भगवान श्री कृष्ण का तो नाम ही श्याम लिया जाता है। लेकिन उनका यह श्याम रंग बनने की कहानी है। दरअसल जब श्री कृष्ण के मामा कंस ने राक्षसी पुतना को जन्माष्टमी के दिन जन्मे शिशुओं को स्तन से विषपान करवाकर मरवाने के लिये भेजा तो श्री कृष्ण ने विषपान तो किया लेकिन भगवान का क्या बिगड़ना था, पुतना तो मारी गई लेकिन बाल गोपाल विषपान करने से श्याम वर्ण के हो गये। अब उन्हें यह चिंता सताने लगी कि इस श्याम रंग के साथ प्रिय सखी राधा सहित अन्य गोपियां उन्हें भाव नहीं देंगी। गौर वर्णीय राधा को जब भी वे देखते उन्हें स्वयं का श्याम वर्ण होना अखरने लगता। वे इसकी शिकायत अपनी मैया यशोदा से करते हैं वो गीत तो आपने भी सुना होगा यशोमति मैया से बोले नंदलाला, राधा क्यों गौरी मैं क्यों काला। तो माता उन्हें प्रसन्न करने के लिये सुझाव देती हैं वह भी राधा के मुख पर वैसा ही रंग लगा दे जैसा वे चाहते हैं। बस माता की शय मिलने की देर थी, नटखट श्याम राधा सहित सभी गोपियों को रंगने लग जाते हैं। धीरे-धीरे उनकी यह शारारत फैलने लगती है और ऋराज वसंत के इस प्यार भर मौसम में एक दूसरे पर रंग डालने की यह लीला एक प्रेममयी परंपरा के रूप में हर साल फाल्गुन के महीने में निभायी जाने लगती है। होली के दिनों में मथुरा वृंदावन का नजारा तो आज भी देखते ही बनता है।

क्या है महत्व

वैसे यह श्री राधा व भगवान श्री कृष्ण की होली पर खेले गइ यह प्रेम लीला एक प्रतीक भर है कि यह रंग कोई भौतिक रंग नहीं है बल्कि भक्ति का रंग है। भगवान का रंग है, सद्भावना का रंग है, विश्वास का रंग है जिनसे होली खेली जाती है। और जो होली जलाई जाती है वह संदेह की, अहंकार की, वैराभाव की, ईर्ष्या की होली जलाई जाती है जिसके उपरांत ही निष्काम प्रेम की कामना पूर्ण होती है और अपने आराध्य श्री कृष्ण की अपने टाकुर जी की कृपा प्राप्त होती है।





अपनी जिंदगी की महानायिका हैं आप

वह नायिका है . उसके आने से आती है एक मधुर सुगंधित आहट । आहट त्योहार की । आहट रास, उल्लास और श्रृंगार की । आहट आस्था, अथात्म और उच्च आदर्शों के प्रतिस्थापन की । सुंदर सुकोमल फूलों की वादियों के बीच खुल जाती है । खुशबू की महकती राह, उसके आने से । नायिका को बिखेरती है चारों तरफ खुशियों के खूब सारे खिलते-खिलखिलाने रंग उसके कई रंग है, हर रंग में एक आस है, विश्वास है और अहासा है । उसके रूप में संस्कृति है, सुरुषि है और सौंदर्य है । वही केन्द्र में है, वही परिधि, हर कोने में सुयुवत होती है उसकी शक्ति । उस दिव्य शक्ति के बिना किसी त्योहार, किसी पर्व, किसी रंग और किसी उमंग की कल्पना संभव नहीं है । हमारे समस्त रीति-रिवाज, तीज-त्योहार या अनुष्ठान-विधान हमारी नायिका के हाथों ही संपन्न होती है । इस धरा की महकती मिट्टी की महिमा है कि नायिका इतने सम्मानजनक स्थान पर प्रतिष्ठापित है । सदियों पूर्व इसी सौधी वसुंधरा पर भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को अपना विराट वस्वरूप दिखाते हुए कहा था -

‘ कीर्तिः श्री वाक्चर नारीणां स्मृति मेधा धृतिः क्षमा ।’

अर्थात् नारी में मै, कीर्ति, श्री, वाक्, स्मृति, मेधा, धृति और क्षमा हैं ।

दूसरे शब्दों में इन नारायण तत्वों से निर्मित नारी ही नारायणी है । संपूर्ण विश्व में भारत ही वह पवित्र भूमि है, जहां नारी अपने श्रेष्ठतम और पवित्र रूपों में अभिव्यक्त हुई है । हमारी आर्य संस्कृति में नायिका अतिविशिष्ट स्थान रहा है । आर्य चिंतन में तीन अनादि तत्व माने गए हैं - परब्रह्म, माया और जितन । माया, परब्रह्म की आदिशक्ति है एवं जीवन के सभी क्रियाकलाप उसी की इच्छाशक्ति होते हैं । ऋग्वेद में माया को ही आदिशक्ति कहा गया है उसका रूप अत्यंत तेजस्वी और ऊर्जावान है । फिर भी वह परम कारुणिक और कोमल है । जड़-चेतन सभी पर वह निस्पृह और निष्पक्ष भाव से अपनी

करुणा बरसाती है। प्राणी मात्र में आशा और शक्ति का संचार करती है। देवी भगवत के अनुसार - 'सम्पत् विधाएं', कलाएं, ग्राम्य देवियां और सभी नारियां इसी आदिशक्ति की अंशरूपिणी हैं। एक सुमंत्र में देवी कहती हैं - 'अहं राष्ट्री संगमती बसना अहं रुद्राय धनुरातीमि' अर्थात् - 'मैं ही राष्ट्र को बांधने और ऐश्वर्य देने वाली शक्ति हूं। मैं ही रूद्र के धनुष पर प्रत्यय चढ़ाती हूं। धरती, आकाश में व्याप्त हो मैं मैं मानव प्राण के हृत्ति संग्राम करती हूं। विविध अंश रूपों में यही आदिशक्ति सभी देवताओं की परम शक्ति कहलाती हैं, जिसके बिना न खो अपूर्ण हैं, अकेले हैं, अधूरे हैं। हमारी यशस्वी संस्कृति सभी को कई आकर्षक संबोधन देती है। मां कल्याणी है, जूनी गृहलक्ष्मी है। बिट्टया राजनंदिनी है और नवेली बहू के कुंकुम चरण ऐश्वर्य लक्ष्मी आगमन का प्रतीक हैं। हर रूप में वह आरक्ष्या है। पौराणिक आख्यान कहते हैं कि आनिदाल के से नैसर्गिक अधिकार उसे स्वतः ही प्राप्त हैं। कभी मांमोने नहीं पड़े हैं। वह सबदे देने वाली है। अपना सर्वस्व देकर भी वह पूर्णतः के भाव से भर उठती है। जल, थल, अग्नि, गगन और समीर इन्हीं पंचतत्वों की मिलाकर ही सृष्टिर्जात न 'उसे' भी रचा है। उसके सुंदर सपने भी उम्मीद भर आकाश ग्रहण करते हैं। 'वह' भी अनुभूतियों की मधुरतम सुगंध से सरोवरो होना चाहती है। मंदिर की खनकुरी सुरीली घंटियों-सी 'उसकी' खिलखिलाहट भी चहुँओर बिखर जाना चाहती है। महत्वाकांक्षा की आभ्रमंडलियों 'उसके' भी मन-उपवन को महकाना चाहती हैं, किंतु यथाथः वह समाज में सिर्फ 'देह' समझी जाती है। उसके सपने आकाश ग्रहण करें, उससे पहले बिखेर दिए जाते हैं, अनुभूतियां छल-कपट का शिकार हो छटपटाती रह जाती हैं, उसकी हंसी कुकुरल की कड़ाहट के कुहासे में दबना दी जाती है और महत्वाकांक्षा कैदघर में परिवर्तित हो हमेशा की चुनम बन जाती है। ऐसा यथा चाहै उसे इस समाज से, जो

नए युग की नई नारी ने प्रगति
की, पर सम्मान नहीं बढ़ा

नए युग की नारी के पास कामयाबी के उच्चतम शिखर को छूने की अपार क्षमता है। उसके पास अनगिनत अवसर भी हैं। ज़िंदगी जीने का जब्जा उसमें पैदा हो चुका है। दृढ़ इच्छाशक्ति एवं शिक्षा ने नारी मन को उच्च आकांक्षाएं, सपनों के सजगर्य एवं अंतरंग की परतों को खोलने की नर्सार दी है। निःसंदेह आज की नारी की भूमिका में तीव्रता से परिवर्तन हुआ है। पहले वह घर की रानी थी, फिर उत्तम कार्यों में संलग्न होकर समाज कल्याण में प्रवृत्त हुई और आज वह राजनीतिज्ञों एवं प्रशासकों की सामाजिक भूमिका में उतरी है। तथापि हम इस तथ्य से भली-भाँति अवगत हैं कि नारी की पारंपरिक भूमिका का अतिक्रमण आज अभी शेष है और कि उसके विरुद्ध पूर्णव्याप्त होना सदा की भाँति प्रबल है।

इस सदी की नारी समाज में 'टेक ओवर' करने के रूप में उभरी है। उसने कड़ी मेहनत से बहुत तरक्की की है, पर उसका समाज में सम्मान नहीं

बढ़ा। उसके वजूद से जुड़े प्रश्न आज भी उठते हैं। सबकुछ हासिल करने के बाद भी उसका नाम, उसकी तरक्की उसे खोखला महसूस करा जाते हैं। क्यों? क्योंकि पुरुष वैज्ञानिक रूप से चांद पर पहुंचकर भी मानसिक रूप से रसातल में ही है।

‘नारी के सतीत्व और पुरुष के पुरुषत्व में अंतर मातृ इतना ही है कि जिस का सतीत्व उसके शरीर से जुड़ा है, जिसके भंग होते ही उसका मातृत्व जीवंत हो उठता है।

नारी की दुनिया में सबकुछ है— उसका घर, परिवार, नाते—रिश्ते, समाज—संसार लेकिन वह स्वयं कहां है? एक सृजनशील, विकासवान व्यक्तित्व के रूप में? यह खोज आज उसके लिए बेहद जरूरी है, क्योंकि यह उसके अस्तित्व का सवाल है और यह सवाल बहुत नाजुक है। नारी जो मां है, बहन है, बेटी है, पत्नी है उसके हिस्से में अभी भी चूल्हे, धुंध, बिस्तर, बच्चे, बर्तन, दहलीजें हैं। वह सिर्फ निर्णय मानने वाली एक छोटी और दास इकाई है। अधिकशतः ग्रेजुएशन करने वाली लड़कियों में यही भाव प्रमुख होता है कि घर में खाली बैठने से तो कॉलेज जाना बेहतर है। हजारों महिलाएं हर बरस देवदासी बना दी जाती हैं।



या वेश्यावृत्ति के नरक में धकेल दी जाती है। जीवन से मोहभंग की स्थिति झेलने को वह तैयार नहीं है। अपने अन्दर नारी शक्ति की ऊर्जा को समेकित उलझनों को वह बाहर निकाल फेंकने लगी है। यह सब इसलिए कि माहौल में 'स्त्री विमर्श' घुल रहा है बल्कि यह सब इसलिए कि नारी आस रोजे, बिसूरने के मुछ में नहीं है। दोयम दर्जे को लेकर उसका नजरिया नहीं, कभी नहीं जैसा वह चला है।

इक्कीसवीं सदी की 'न्यू वुमन' अपने प्रति समाज की भावनाओं, प्रतिक्रियाओं में बदलवा चाहती है। रिश्तों-संबंधों में सुख का सृजन, निर्भर व्यव्थत उम्मा बनाए रखने का सबल मन, पुरुष के साथ सम्भाव्य का आधार चाहती है, जिसकी शुरुआत घर से ही होती है। घर का केसा भी कोई काम हो, सबसे

भारतीय संस्कृति में नारी के सम्मान को बहुत महत्व दिया गया है। संस्कृत में एक श्लोक है- 'यस्य पूज्यते नार्यस्तु तत्र रमन्ते देवताः। अर्थात्, जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। किंतु वर्तमान में जो हालात दिखाई देते हैं, उसमें नारी का हर जगह अपमान होता चला जा रहा है। उसे 'भोग की वस्तु' समझकर आदमी 'अपने पीके' से 'इस्तेमाल' कर रहा है। यह बेहद चिंताजनक बात है। लेकिन हमारी संस्कृति को बनाए रखते हुए नारी का सम्मान कैसे किया जाए, इस विचार करना आवश्यक है।

वह देने में सक्षम नहीं है सहारा, सुविधा, संसाधन और सहायता? नहीं। उसने हमेशा एक सुंदर, संस्कारित, उच्च मानवीय दृष्टिकोण वाला सभ्य परिवेश चाहा है। अपनी सहृदयता के उसे नैतिक संकल और सुविवर्य दौजिए किए वह सिद्ध कर सके – अपने व्यक्तित्व को, अपनी विशिष्टता को। अपने ही पूरक पुरुष को पछाड़ना उसका मानस नहीं है, उनसे आगे निकल जाना उसका ध्येय नहीं है, वह तो समाज में अपना एक वजूद चाहती है, एक पहचान चाहती है, जो उसको अपनी ही। क्यों समाज कृष्ण और कंगाल हो जाता है, जब कुछ उसे देने की बात आती है, जिसने अपने पृथ्वी पर आगमन से ही सिर्फ और सिर्फ दिया है, लिया कुछ नहीं।

मुट्ठी भर आसमन, एक चुटकी धूम, अजुनी भर हवा और थोड़ी-सी गीमन, जहां वह अपने कदमों को आत्मविश्वास के साथ रख सके। बस इससे अधिक तो कभी नहीं चाहा उसने! फिर क्यों उसके उत्थान के उज्ज्वल सूर्य को अरुध्य देने में सारे समाज का समंदर बरसरा उठता है? क्यों उसके विस्तार की घरा को अभिस्पर्शित करने में समाज के हाथ पंगु हो जाते हैं और क्यों उसके विरट महत्व को स्वीकारने में सारा समाज संकीर्ण हो जाता है?

कई रिश्तों में बंती लेकिन सबको जीती हुई, मां, पत्नी, प्रेमिका, मित्र, बहू, बेटी, बहन, ननद, भाभी, देवरानी, जेठानी, चाची, ताई, मामी, बुआ, मौसी, दादी, नानी, बॉस, सहकर्मिअनत सूची है.. मीठे, मोहक रिश्तों को अपने आंचल में बांधें तलाशी लेते वह खुद को। वह मिलती है खुद से। रिश्ते इतने सुरीले-सुरम्य आंगन में खड़ी वह बनती है एक रिश्ता अपने आप से। जी हा, नायिका का एक रिश्ता और है और वह है खुद का खुद से। स्वयं का स्वयं से। अपना सबकुछ देने के बाद भी वह बदा कर रखती है खुद को खुद के लिए। वह नहीं भूलती उस खूबसूरत रिश्ते को जो उसका उससे है।

यह रिश्ता नायिका का उससे परित्यक्त करता है। यही रिश्ता कहता है उससे, खुद में ही झांके के लिए। कितने मधुर सपने हैं उसके भीतर जो साकार होने के लिए कमसमा रहें हैं। यह रिश्ता उसे चुनौती देता है, ऐसा क्या है जो वह नहीं कर सकती? फिर यही कहता है उससे-सब कुछ तो कर सकती हो तुम।

यह रिश्ता उसका उस पर ही विश्वास स्थापित करता है, और वह जीत जाती है दुनिया की हर जंग। वह अपने आप से लड़ती भी है, वह अपने आप से प्यार भी करती है। वह अपने आप का सम्मान भी करती है। यही रिश्ता समझाता है उसे-खुद के लिए वह क्या है और उसकी जिंदगी के क्या मायने हैं। क्या आपका है अपने आपसे यह रूहानी रिश्ता? डेर सारे रिश्तों के बीच बनाए हुए गहरा, नाजुक, मधुर और मजबूत रिश्ता अपने आप सेक्रेणॉफि आप नायिका है। अपनी ही जिंदगी पर बनी अपनी ही फिक्म की आप महानायिका है।

कब शुरू हुआ और आखिर क्या है विश्व महिला दिवस का इतिहास?

विश्व अंतर्राष्ट्रीय दिवस 8 मार्च को पूरी दुनिया में मनाया जाता है। यह महिलाओं के लिए अब एक उत्सव के रूप में बदल गया है। इस मौके पर कई तरह के आयोजन किए जाते हैं, लेकिन इसकी शुरुआत को इतिहास को लेकर भी कई दिलचस्प पहलू हैं। आज हम आपको बताएं कि अखिर महिलाओं से जुड़े इस उत्सव की शुरुआत कब हुई और क्या है इसका इतिहास।

दरअसल, समानाधिकार के लिए महिलाओं की लड़ाई के बाद इसे मनाने की परंपरा शुरू हुई। प्राचीन ग्रीस में तीसिसद्राटा नाम की एक महिला ने प्रेक्ष क्रांति के दौरान युद्ध समाप्ति की मांग रखते हुए इस आंदोलन की शुरुआत की थी। फारसी महिलाओं की एक समूह ने बरसेलस में इस दिन एक मोर्चा निकाला। इस मोर्चे का मकसद युद्ध की वजह से महिलाओं पर बढ़ते हुए अत्याचार को रोकना था। साल 1909 में सोशलिस्ट पार्टी ऑफ अमेरिका ने पहली बार पूरे अमेरिका में 28 फरवरी को महिला दिवस मनाया था।

सन 1910 में सोशलिस्ट इंटरनेशनल द्वारा कोपेनहेगन में महिला दिवस की स्थापना हुई। 1911 में ऑस्ट्रिया, डेनमार्क, जर्मनी और स्विट्जरलैंड में लाखों महिलाओं द्वारा रैली निकाली गई। मतदाधिकार, सरकारी कार्यकारिणी में जगह, नौकरी में भेदभाव को

खत्म करने जैसी कई मुद्दों की मांग इस रेल में की गई। 1913-14 प्रथम विश्व युद्ध के दौरान, रूसी महिलाओं द्वारा पहली बार शांति की स्थापना के लिए फरवरी माह के अंतिम रविवार को महिला दिवस मनाया गया। यूरोप में भी युद्ध के खिलाफ प्रदर्शन हुए। 1917 तक, विश्व युद्ध में रूस के 2 लाख से ज्यादा सैनिक मारे गए, रूसी महिलाओं ने फिर रौंदी और शांति के लिए इस दिन हड़ताल की। हालांकि राजनैता इसके खिलाफ थे, फ़िदेल भी महिलाओं ने एक नही सुनी और अपना आंदोलन जारी रखा और फलतः रूस के जार को अपनी गद्दी छोड़नी पड़ी और सरकार को महिलाओं को वोट देने के अधिकार की घोषणा करनी पड़ी। यह दिन महिलाओं को उनकी क्षमता, सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक तरक्की दिलाने व उन महिलाओं को याद करने का दिन है जिन्होंने महिलाओं को उनके अधिकार दिलाने के लिए अथक प्रयास किए। भारत में भी महिला दिवस व्यापक रूप से मनाया जाने लगा है। पूरे देश में इस दिन महिलाओं को समाज में उनके विशेष योगदान के लिए सम्मानित किया जाता है। समाज, राजनीति, संगीत, फ़िल्म, साहित्य, शिक्षा क्षेत्रों में श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए महिलाओं को सम्मानित किया जाता है। गरीब महिलाओं को आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है।

अपनी सोच से समाज में सकारात्मकता
का निर्माण कर सकती है स्त्री

घर से लेकर ऑफिस तक। राजनीति से लेकर समाज तक। यह वह दौर है जब महिलाएँ हर क्षेत्र में अपना वर्चस्व कायम कर रही हैं। कई मामलों में महिलाओं की भागीदारी लगातार बढ़ रही है। ठीक इसी तरह सांप्रदायिकता और अराजकता के इस माहौल में भी महिलाएँ अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं, दरअसल, महिलाएँ अपने बच्चों, पति और घर के अन्य पुरुषों को अपनी सकारात्मक सोच और विचार से प्रभावित कर सकती हैं। इसमें कोई संशय नहीं कि किसी भी पुरुष और बच्चे में सकारात्मक सोच की शुरुआत घर से ही होती है। बच्चा घर में जैसा माहौल देखेगा या उसके परिजनों खासतौर से मां जो उसे सिखाएंगी, जिन विषयों पर उससे चर्चा करेगी, वही आगे चलकर उसके विचारों में शामिल होगा। ठीक इसी तरह पुरुषों की सोच, विचार और मानसिकता को भी घर की महिलाएँ बहुत हद तक नियंत्रित या यूँ कहें कि प्रभावित कर सकती हैं। महिलाओं की भूमिका को इस सकारात्मक परिपेक्ष्य में इसलिए भी देखा जाना चाहिए क्योंकि शारीरिक तौर के साथ ही मानसिक तौर पर भी उन्हें 'सॉफ्ट' माना जाता है। वे कई विषयों को लेकर बेहद संवेदनशील होती हैं। ऐसे में जब समाज में कोई अराजक स्थिति पैदा होती है तो सबसे पहले महिलाओं से उनकी संवेदनशीलता के पैमाने पर ही अपेक्षा की जाती है। हालाँकि शाहीन बाग़ इस मामले में अपवाद है। यहाँ महिलाओं की तय छवि से अलग तस्वीर नज़र आई। यहाँ सही है कि यहाँ महिलाएँ अपनी अभिव्यक्ति की आजादी के लिए प्रदर्शन में शामिल हुई हैं, लेकिन अपने मासूम बच्चों को इसमें शामिल करना, उन्हें ऐसे आंदोलनों का हिस्सा बनाना महिलाओं की छवि से अलग छवि को गढ़ता है। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि महिलाओं ने हर क्षेत्र में अपनी जगह बनाई है, लेकिन सामाजिक जागरूकता के परिपेक्ष्य में भी महिलाओं के लिए जरूरी है कि वे अपनी ताकत को फिर से पहचानें, अपने स्त्री पक्ष से घर में, समाज में और अपने कार्यक्षेत्र में अपनी सकारात्मक सोच का निर्माण करें।



दांत और मसूढ़ों के रोग बड़ी बीमारी की दस्तक

हमारे यहां चाय को स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक तथा नशे का साधन माना जाता है और इससे बचने की सलह न दी जाती है। सबसे पहले तो चाय के विषय में हमन जो गलत धारणा बना रखी है उसको दूर करना जरूरी है। चाय मात्र एक हानिकारक पेय नहीं अपितु यह एक उपयोगी पेय भी है। चाय एक पौधे विशेष का पत्तियां ही तो हैं जिन्हें सुखाकर एक विशेष रंग और स्वाद दिया गया है। किसी भी पौधे की पत्तियां का अर्क या क्वाथ सदैव हानिकारक कैसे हो सकता है ? लेकिन फिर भी कई बार चाय पीना स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं माना जाता और इसका प्रमुख कारण है चाय की तैयार सूखी पत्तों या पेय बनाने की विधि में त्रुटि या कमी।



चाय पारंपरिक भारतीय पेय नहीं है फिर भी इस समय भारत में ये एक अत्यंत लोकप्रिय पेय है। बच्चों से लेकर बूढ़ों तक सभी न केवल चाय की चुस्कियां लेना पसंद करते हैं। चाय से मृताल्लिक एक शेर याद आ रहा है:

एक दोशीज के लबों की तरह, इसमें गरमी भी है मिठास भी है।

हमारे यहां प्रायः सभी लोग चाय बनाना जानते हैं। चाय बनाने के अनेक तरीके हैं और कई प्रकार से इसे तैयार किया जाता है। हमारे देश में विशेष रूप से उल्टी भारत में चाय प्रायः दूध डाल कर तैयार की जाती है। यूरोपीय देशों, रूस और अमेरिका के लोग प्रायः बिना दूध की चाय पसंद करते हैं। तिब्बत की नमकीन चाय का तो स्वाद ही नहीं बनाने की विधि भी रोचक है।

चाय की प्रमुख वैरायटी:

रंग के अनुसार चाय की प्रमुख रूप से तीन वैश्वयी तैयार की जाती हैं:- हरी चाय- काली चाय- ऊलंग चाय उपरोक्त में से हरी चाय या ग्रीन टी लौख में किसी प्रकार के रंग या स्वाद का मिश्रण नहीं किया जाता। इसमें ताजा पत्तियों को मात्र सुखाकर पैक कर दिया जाता है और किसी भी प्रकार की कुत्रिम गंध से इसे मुक्त रखा जाता है। पाकृत पत्तियाँ होने के कारण ही इसे हरी चाय कहते हैं।

हरी चाय से पेय तैयार करने के लिए इसमें दूध नहीं मिलाया जाता। पानी उबाल कर उसमें पत्तियाँ डाल कर ढंक कर रख देते हैं। पत्तियाँ डालने के बाद उस उबाला रहा जाता। थोड़ी देर में पत्तियों का प्राकृतिक रंग स्वभाविक रंग और स्वाद पानी में आ जाता है। इसके छानकर इसमें स्वाद या आवश्यकता अनुसार शर्करा या चीनी मिलाकर इसका सेवन किया जाता है। इस प्रकार से निर्मित चाय न केवल चुस्त-स्फूर्ति और ऊर्जा प्रदान करती है अपितु औषधीय गुणों से भी भरपूर होती है। वैज्ञानिक शोधों से पता चलता है कि इस प्रकार इस चाय में कैंसररोधी गुण यथार्थ मात्रा में मिलते हैं। दूसरे इस चाय से तैयार बिना उबाले हुए चाय में कैफीन जैसे अपेक्षाकर मादक तत्व भी पेय में नहीं आ पाते।

दूसरे और तीसरे प्रकार की चाय की पत्ती को तैयार करने के लिए चाय की पत्तियों के अतिरिक्त बाहर से कई और चीजें मिलाकर उसके रंग और स्वाद को बदल जाता है। यदि ब्लैंडिंग की इस प्रक्रिया में कोई मादक पदार्थ प्रयोग में लाया जाता है तो वह अवश्य ही अपना प्रभाव डालेगा। इस प्रकार आज बाजार में अनेक तरह की चाय की पत्तियाँ

उपलब्ध हैं। काली या ऊलंग चाय की पत्ती से भी चाय तैयार करते हैं। की सही विधि यही है कि चाय की पत्ती को उबलते पानी में भिगोकर थोड़ी देर बाद उस से छान लिया जाए और उसमें गरम दूध और चीनी मिलाकर उसका इस्तेमाल किया जाए। इससे भी हानिकारक तत्व पेय में नहीं आ पाएंगे। कुछ लोग विशुद्ध हरी चाय की पत्ती से तैयार पेय पसंद नहीं करते तो कुछ काली या ऊलंग चाय की पत्ती से तैयार पेय पसंद नहीं करते। इसका सबसे अच्छा उपाय है दोनों प्रकार की पत्तियों को अपनी पसंद के अनुसार मिलाकर प्रयोग किया जाए। कुछ लोग चाय को बहुत पसंद करते हैं लेकिन कुछ लोग इसे न केवल घातक पेय मानते हैं अपितु चाय को भारतीय संस्कृति के खिलाफ भी मानते हैं। क्या चाय हमारे में भारतीय संस्कृति के प्रतिरुद्ध और घातक है ? वास्तव में वैदिक काल से ही विभिन्न रोगों के उपचार के लिए क्वाथ या काढ़ा बनाकर पीने का वर्णन मिलता है। आयुर्वेद में विभिन्न प्रकार की जड़ी-बूटियों अथवा वनस्पतिजन्म पदार्थों से क्वाथ बनाने का वर्णन मिलता है। यूनानी चिकित्सा पद्धति में जोशांदा भी विभिन्न प्रकार की जड़ी-बूटियों को उबालकर ही बनाया जाता है।

काली मिर्च, लौंग, बड़ी और छोटी इलायची, सोंठ या अदरक, पीपल, मुलेठी, उनाब, बनफ़रा आदि विभिन्न जड़ी-बूटियों और मसालों को उबालकर काढ़ा बनाने का प्रचलन आज भी हमारे यहां खूब प्रचलित है। सर्दी-जुकाम के उपचार के लिए तो इससे उपयोगी औषधि भी नहीं सकती। इसी कारण चय में भी अनेक औषधीय गुण विद्यमान हैं जो शरीर को चुस्ती-स्फूर्ति देने के साथ-साथ अनेक प्रकार के रोगों को रोकने अथवा उनका उपचार करने में सक्षम हैं।

चाय को सदैव एक ही तरीके से बनाकर पीने की बजाए अलग-अलग तरीकों से बनाकर पीना अच्छा है। कभी दूध की चाय लें तो कभी बिना दूध की। कभी चाय पत्ती उबाल कर तो कभी बिना पत्ती उबाले बिना दूध के नींबू की चाय आजमाएं। दिन में एक या दो बार बिना दध

कौ बिना उबली सादी या नीबू को चाय अवश्य लें क्योंकि ये एक पेय ही नहीं उत्तम औषधि भी है। चाय को स्वदेशी रूप प्रदान करने के लिए कभी उसमें तुलसी की पत्तियां डाल लें तो कभी इलयची कभी दालचीनी तो कभी साँफ गला खराब है तो गरम पानी में नमक डालकर गरारे करें और साथ ही चाय में भी थोड़ा नमक डालकर पीएं।

हमारे कम को आधार है शरीर। हमारे सुख-दुःख भी इससे जुड़े हैं। हमारे अनुभव भी इसके माध्यम से होते हैं। जीवन को निवृत्ति और प्रवृत्ति के पथ पर अग्रसर करने का उप, साधना का मार्ग भी यही है। इसीलिए निरोगी काया को पहला सुख मानते हैं। साथ ही शरीर स्वयं अपने-आप कुछ करने योग्य भी नहीं है। बिना बुद्धि के, योग के यह कायरत ही होता। शरीर के कण-कण में मन व्याप्त है, अतः जब शरीर की बात आती है, उसके साथ हमारे अध्यात्म की बात आती है, जिसमें हमारी आत्मा भी जुड़ी है। इस अध्यात्म को समझने का मार्ग भी शरीर ही है। हमारी पहली आवश्यकता शरीर को समझने वाले इसे नियंत्रण में रखने की हो जाती है।

हमारे आहार, विहार, निद्रा आदि का क्रम इसे स्वस्थ करता है। समय-समय पर विवेचन भी करना पड़ता है। यात्राओं और आसन का क्रम भी इसे क्रियाशील एवं स्वस्थ करता है। यह सभी क्रम नियम समय पर किए जाते हैं। इनमें बैठना अर्थात् आसन हमारी पूरी दिनचर्या का अंग है। इसे बल शारीरिक गतिविधि मानकर ही हम तरह-तरह से आड़े-टिखे बैठते रहते हैं। इस पर विवेकपूर्वक ध्यान देना हमारी पहली आवश्यकता है। हमारे शरीर का आधार हमारी हड्डी है। सभी स्वास्थ्यवर्धक गतिविधियाँ अथवा रोग या प्राण-हानि रीढ़ से ही संचालित होती हैं। यहाँ तक कि हमारा श्वास भी रीढ़ अथवा पुच्छरूप से ही बहता है। नाक के दोनों ओरों जीवनशक्ति को मूलधार से ऊपर की ओर विकसित करना इसकी सकारात्मक दिशा है। यह शक्ति भावनात्मक रूप से जुड़ते ही अपना स्वरूप बदल देती है। मूलधार का ऊपर से शुद्धिग्रस्त इसका स्थान है। क्रोध को बदला इसकी रीढ़ की गति अधोगामी कर देता है। इसका सबसे ज्यादा भाव शरीर के निचले अंगों पर दिखाई देने लगता है। अत्यन्त दुर्गंध का अवस्था में सारा शरीर काम्य होने लगता है। लोगों का दृढ़ इसकी प्रथम सूचना देती है, जो आगे चलकर दिव्या में परिवर्तित हो जाता है।

मुंह को शरीर का आईना माना जाता है और इसमें दांत की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण होती है। विशेषज्ञों की राय में सुंदर चेहरे के लिए सुंदर और स्वस्थ दांत का होना आवश्यक है लेकिन दांत की सुंदरता के साथ इसका स्वस्थ होना अनिवार्य है। हाल के वर्षों में किए गए अध्ययनों से

पता चलता है कि दांत और मसूड़ों की बीमारी कई अन्य गंभीर बीमारियों की जनक है, जैसे हृदय रोग, मधुमेह आदि। कई पश्चिमी देशों में नौ फौरन को 'डेंटल डे' मनाया जाता है। इस दिन दांत दर्द एवं इसके अन्य रोगों से बचाव हेतु जागरूक अभियान चलाया जाता है तथा शरीर की सुंदरता में इसके महत्व को रेखांकित किया जाता है। हालांकि इस दिवस की पृष्ठभूमि तथा इस मनाये के सही सही कारणों की जानकारी तो उपलब्ध नहीं है, लेकिन अन्य दिवसों की तरह यह भी कुछ पश्चिमी देशों में प्रचलित है।

● मुंह में मुख्यता दो प्रकार की बीमारी होती है। पहली, दांतों में कीड़ा लगना तथा दूसरी, मसूढ़ों की बीमारी जिसे सामान्य बोलचाल में पायरिया कहा जाता है।

- सही जानकारी और उचित देखभाल की कमी के कारण दांतों में बचपन से ही कीड़े लगने शुरू हो जाते हैं तथा समय के साथ यह बढ़ता चला जाता है, जो दांत दर्द का सबब बनता है।

- मसूढ़ों की बीमारी तथा संक्रमण की वजह से शरीर के अन्य अंगों पर संक्रमण का खतरा बन जाता है, जिसमें दिल, धमनियों की समस्या, मधुमेह का अनियंत्रित होना आदि शामिल है।



- दांतों को बीमारी से बचाने तथा उसकी उचित देखभाल के लिए छह महीने या साल में कम से कम एक बार दंत चिकित्सक के पास अनिवार्य तौर पर जाना चाहिए।

● भारत के कई शहरों में हाल में हुए सर्वेक्षणों से पता चलता है कि लोगों में दांत से जुड़ी जरूरी जानकारी का अभाव है तथा खान-पान से इस पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में अधिकांश लोगों में अज्ञानता है।



● खाना खाने के बाद जीभ तथा दांत की अच्छी तरह सफाई, इसके लिए मुलायम ब्रश का इस्तेमाल करना चाहिए।



● ब्रश से दांतों की सफाई तो हो जाती है लेकिन इससे दो दांतों बीच का हिस्सा साफ नहीं हो पाता है जिस कारण वहां पर धीरे-धीरे कीड़े लगने शुरू हो जाते हैं, जो बाद में समस्या बनकर उभरती है। इसे साफ करने के लिए फ्लिशिंग का इस्तेमाल करना चाहिए।

● यह एक प्रकार का धागा होता है, जो दांतों के बीच का हिस्सा साफ करता है लेकिन लोग समान्यता इसका उपयोग नहीं करते हैं, जो कीड़ा लगने का बहुत बड़ा कारण होता है।

● अधिक मीठा खाने से परहेज करना चाहिए। ऐसी चीजों को खाने से बचना चाहिए जो दांतों तथा मसूढ़ों से चिपक जाती हैं, जैसे बिस्किट, चाकलेट, आइसक्रीम आदि।

- दांतों को मजबूत तथा निरोग रखने के लिए फाइबर युक्त खाद्य पदार्थों का सेवन अधिक से अधिक करना चाहिए।

गलत डायटिंग यानी बीमारियों को खुला निमंत्रण

बॉलीवुड के सितारों की अंधाधुंध नकल करके छहरी का बच्चा इच्छुक युवक युवतियों को 'डॉक्टरों' की सलाह है कि बिना किसी विशेषज्ञ की राय के डायटिंग न करें अन्यथा वे क्षय रोग तथा मानसिक बीमारियों के शिकार हो सकते हैं। गौरालब है कि हमारे शरीर में क्षय रोग के जीवाणु माइक्रोबैक्टीरियम ट्यूबरकोलाई निश्चय अवस्था में रहते हैं और जब कोई व्यक्ति बिना किसी कारण एकदम से खाना कम कर देता है अथवा किसी अन्य कारण से उसे भ्रष्टाचार भोजन नहीं मिल पाता तो शरीर की प्रतिरोधक क्षमता कम होने लगती है। ऐसी स्थिति में शरीर में मौजूद क्षय रोग के जीवाणुओं के सक्रिय होने की आशंका बढ़ जाती है। यह एक तरह से जगजाहिर हो है कि हमारे देश में लोगों की कहीं भी थूक देने की आदत है। लोग मुंह को बिना ढंके खांसते भी रहते हैं। जो व्यक्ति डायटिंग कर रहा होता है उसके शरीर का प्रतिरोधी तंत्र कमजोर हो जाता है। इसका असर यह होता है कि थूक या खांसी के जीवाणु उसके शरीर को आसानी से प्रभावित कर देते हैं।

आज का युवा चाहता है कि उसका शरीर ग्रीक देवता अथवा बॉबी गुड्डिया जैसा हो जाय। आज के शहरी युवक और युवतियाँ अपने शरीर को कष्ट पहुँचाने से भी नहीं हिचकती और जितनी शरीर की आयकता होती है उससे कम मात्रा में भोजन करती हैं। ऐसे युवा कार्बोहाइड्रेट एवं वसा युक्त पदार्थों को तो बिचकूल भी नहीं लेते जो शरीर के लिए बेहद जरूरी हैं। युवतियों में खाना नहीं खाने की प्रवृत्ति एनोरेक्सिया बीमारी उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर पर अधिक पाई जाती है क्योंकि वे अपनी फिगर तथा भोजन को लेकर ज्यादा चिंतित रहती हैं। युवकों में इस बीमारी को बुलीमिया कहा जाता है। नौजवानों को सलाह है कि अपने आदर्श माडलों, अभिनेताओं को उनकी दुनिया में ही रहने दें और स्वयं को इस धरातल पर उतार कर जीना सीखें।

जानबूझकर कम खाना धीरे-धीरे एक आदत बन जाता है और ऐसे युवक युवतियाँ मानसिक बीमारियों और अवसाद का शिकार हो जाते हैं। ऐसे लोगों की इच्छा लगातार अपना वजन कम करने की होती है। डाइटिंग करने वाली लड़कियों

में मिल, यकृत और गुर्दों को बहुत नुकसान पहुंचता है और लगातार काम को छोड़ने से शरीर को ज़रा प्रणाली धीमी पड़ जाय। जिनसे निम्न रक्त चाप, नब्ब और सांस का भी मिला होना प्रमुख है। शरीर को पर्याप्त ऊर्जा नहीं मिलने से ऐसेसे व्यक्ति काम पर ध्यान नहीं दे पाते और उनमें खूब की कमी तथा जोड़ों की सूजन आम लक्षण होते हैं। इसके अलावा उनमें बाल गिरते, नाखून टूटने और शरीर के अन्य हिस्सों में बाल उगने जैसी बीमारियाँ भी हो जाती हैं। यदि समयपर रहते इनका उपचार न किया जाए तो व्यक्ति कुपोषण का शिकार बन जाता है और अंत में उसकी मौत भी हो सकती है।

विशेषज्ञों की राय है कि हर व्यक्ति के शरीर की शारीरिक बनावट अलग है और उसकी लंबाई के हिसाब से ही उसका वजन होता है। लंबाई और वजन के प्रतिशत अनुपात को बाडी मांस इंडेक्स कहा जाता है जो बता सकता है कि किसी व्यक्ति का वजन उसके लंबाई हिसाब से कम है अथवा ज्यादा।

टाईम पास

आज का राशिफल	
 चू चे घो ला ली लू ले लो आ	आपके पूंजीगत निवेशों से भी लाभ होगा। पारिवारिक उत्तरदायित्व अधिक करेगा। पदोन्नति मिलने का योग है। आमदनी में वृद्धि होगी। यात्रा में सावधानी बतें। क्षमा से अधिक कार्य करने से मर्ज बिगड़ सकता है। मनचाहा स्थानान्तरण मिल सकता है। अपने लक्ष्य के प्रति सजग रहें। शुभांक-2-5-6
 संतत काम से हर्ष के प्रगम बनेंगे। समय को देखकर कार्य करना ज्यादा हितकर रहेगा। पश्रिम अधिक करना पड़ेगा तभी आप लाभ की आशा कर सकते हैं। कार्य क्षेत्र में पदोन्नति के योग बनेंगे। बौद्धिक कार्यों में सक्षता बढ़ेगी। स्वास्थ्य मन: स्थिति से अधिक प्रभावित होगा। शुभांक-3-8-9	 बृष इ ए ओ वा वी चू चे वो
 का की सू घ ड ठ के को हा	पुरुषार्थ और कर्म बल पर आपको सफलता मिलेगी। व्यवसायिक क्षेत्र में आप वर्तमान क्षमता को बढ़ाएंगे। उपक्रम का विस्तार करने का प्रयास सफल होगा। आप अच्छी सफलताएं प्राप्त करेंगे। बुद्धि कौशल से चुनौतीपूर्ण कार्यों में सफलता मिलेगी। आर्थिक समय उपलब्धिकाकर रहेगा। शुभांक-4-5-6
 मिठ व्यवस्था रखें क्योंकि रुपय-पैसे की सुविधा आपको मिले न मिले। व्यापार में स्थिति नरम रहेगी। सेवीय से सफलता मिलेगी। कार्यक्षेत्र में स्थिति सामान्य ही रहेगी। जीवनसाथिका परमर्श लाभदायक रहेगा। समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बना रहेगा। पुरुषार्थ का सहारा लें। शुभांक-4-6-8	 कर्क ही हू हे हो डा डू डू डे डो
 मा मी नू ने मो रा टी टू टू	निकटस्थ व्यक्ति का सहयोग काम को गति देगा। यात्रा का दृगामी परिणाम मिल जाएगा। कामकाज में बाधा को दूर करेंगे। सुविधा और समन्वय बना रहने से कामकाज में प्रगति बल जाएगी। आर्थिक हित के काम को साधने में मदद मिल जाएगी। आनन्ददायक वातावरण रहेगा। शुभांक-3-5-6
 कार्यारम्भ से पहले उचित मूल्यांकन कर लें। मध्यस्थ पूर्व समय आपके पक्ष का बना रहेगा। कारोबारी काम में प्रगति बनती रहेगी। पश्रिम प्रयास में काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। पर-प्रयत्न में ना पड़कर अपने काम पर ध्यान दीजिए। कल का पश्रिम आज लाभ देगा। शुभांक-5-7-8	 कन्या टो पा बी पूष ण ट पे पो
 रा टी ठू रे हो ता टी तू ते	ज्ञानीजों का सान्निध्य प्राप्त होगा। आध्यात्मिक वातावरण बनेगा। कारोबारी काम में नवीन लाभमैल और समन्वय बना रहेगा। यात्र-दोस्तों के साथ साधने में किए जा रहे काम में लाभ मिल जाएगा। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सलता से संपन्न हो जाएंगे। जोखिम से दूर रहना ही बुद्धिमानि होगी। शुभांक-1-5-8
 विवाहों व मुकुटमंवाजी से रहत मिलेगी। पश्रिम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। कामकाज में आ रही बाधा दूर होगी। बाहरी और अंदरूनी सहयोग मिलता चला जाएगा। लेन-देन में आ रही बाधा को दूर करने के प्रयास सफल होंग। भाई-बहनों का प्रेम बढ़ेगा। शुभांक-5-7-9	 वृश्चिक तो ना नी नू ने नो य वी यू
 घनु ये घो मा मी टी पा फा बा ने	अनरुच कार्य सम्पन्न होंगे। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। आय-व्यय की स्थिति समान्य रहेगी। शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते होंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। अपनों का सहयोग मिलेगा। स्वयं को अधिक सक्रिय पाएंगे। शुभांक-3-5-7
 ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। शारीरिक सुख के लिए व्यसनों का त्याग करें। पठन-पाठन में प्रगति काजगार रहेगी। खान-पान में सावधानी रहे। व्यापार में स्थिति होगी। भ्रातृपक्ष में विरोध की संभावना है। शिक्षा में आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। धार्मिक यात्रा का योग है। शुभांक-2-5-8	 मकर मे ना जी खी खू खे खो गा गी
 गू ने गो सा डी खू से मो रा	हरि कर से खरी आन: हानि का कोई भय नहीं, यथावत कार्य जारी रखें। व्यापार व नौकरी में स्थिति अच्छी रहेगी। आलस्य का त्याग करें। पुरुषार्थ का सहारा लें। कार्यसिद्धि होने में देर नहीं लगेगी। आर्थिक लाभ उत्तम रहेगा। शैक्षणिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। मांगलिक कार्य पर वातां होगा। शुभांक-3-4-6
 मुंह मांगी सुरुद मिलेगी जहां इच्छित फल की प्राप्ति होगी। मध्यस्थ पूर्व समय आपके पक्ष का रहेगा। कारोबारी काम में प्रगति बनेगी। लेन-देन में कामकाज दूर करने के प्रयास सफल होंग। धार्मिक कार्य में समय व धन व्यय होगा। अपना काम दूसरों के सहयोग से पूरा होगा। शुभांक-2-4-7	 मीन दी दू थ ज्ञ ज दे दो चा ली

काकुरो पहेली - 2757

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए, किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता।

उदाहरणतः

15	24	1	2	3	4	5
7						
8						
9						

1+2=3
1+3=4
7+9=16
8+9=17

काकुरो - 2756 का हल

सूडोकु - 2757

सूडोकु - 2756 का हल

7	8	5	4	2	9	6	3	1	4
3	6	4	1	5	7	8	9	2	1
9	2	1	6	3	8	7	4	5	7
6	5	3	2	8	4	9	1	7	5
1	7	2	3	9	6	4	5	8	3
4	9	8	7	1	5	2	6	3	9
2	4	7	5	6	1	3	8	9	7
5	3	9	8	4	2	1	7	6	2
8	1	6	9	7	3	2	1	5	4

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं।
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3x3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें।
- पहले से मौजूद अंकों का आप हटा नहीं सकते।
- पहेली का केवल एक ही हल है।

लॉ

भि
को कुछ
रा
कि तुम
भि
लाल म
पर बैठ
है।

रा
भि
दिखाई

दो
विवाद
और दो
पश्चात
तमाम

त
में कूद
को गोल
मुझे मा
फौ
गयी।
वाला

रमे
जमाने
शु
तो सार
बारे में।

केंग जोन

गारी - भगवान के लिए भिखारी
 दो बाबा.
 गोर - भीखा तो देदू, पर कैसे मानूं
 घे हो?
 गरी - साहब, क्या सामने वाले
 न के पीछे नीले मकान की छत
 पेफेद कबूतर आपको दिखा रहा
 गोर - हां, मुझे तो दिख रहा है.
 गरी - लेकिन वह कबूतर मुझे
 ही दे रहा है.

☺ ☺ ☺

डोसियों में किसी बात को लेकर
 रू हो गया. मामले ने तूल पकड़ा
 और से पथराव और मारपीट के
 दूकें तन गयी. मोहल्ले वालों की
 शिशों के बावजूद कोई नहीं रुका.
 एक आदमी दोनों पक्षों के बीच
 झा और बोला- अगर तुम लोगों
 ही चला नी है, तो मुझ पर चलाओ,
 डालो.

त दोनों पक्षों की बंदूकें नीची हो
 द में पता चला-बीच में कूदने
 वित दोनों पक्षों का कर्जदार है.

☺ ☺ ☺

(मुकेश से)- 'इस महंगाई के
 गरीब आदमी क्या सोचता है?'
 श (रमेश से)- शादीशुदा नहीं है
 क बार में. शादीशुदा है तो मौत के

फिल्म व

1	2								
		7							
9									
			13	14					
17					18				
			19						
		22							
24			25						
29					30				

ब

१. जैको ब्राफ, माधुरी की 'सात सुखे
 तार' गीत वाली फिल्म-३
३. 'चांदी की साइकल' गीत वाली
 गोविंदा, जुही चावला की फिल्म
५. अक्षय, करिश्मा की 'गोरी कैलाश
 हसीना का' गीत वाली फिल्म-३
७. नसीरुद्दीनशाह, जैकी, नगमा, शि
 की एक फिल्म-२
८. फिल्म 'जाल' की नायिका कौन
९. 'आयेगा आनेवाला' गीत वाली
 अशोककुमार, मधुबाला की फिल्
१०. फिल्म 'हीरा फना' में देव आनं
 कीदार का धाम क्या था-२
११. 'दिल क्यों धड़कता है' गीत वा
 राहुलगाय, पूजा भट्ट की फिल्
१३. जैकी ब्राफ, डिम्पल की 'क्या है
 तुम्हारा नाम' गीत वाली फिल्
१५. दक्षिण की फिल्म 'थेवर मगर'
 किस भाषा में बनी थी? -३
१७. 'बोरु' और 'बसंती' आ
 किस सुपर हिट फिल्म के पात्र है

शब्द पहेली - 2757

1	2		3			4		5	
6				7				8	9
			10						
11					13		14	15	
					16				
		17						18	
				19					20
21							22		
			23	24					
25	26	27						28	
	29					30			

हेली - 2757

4	5	6	
8			
		11	12
	15	16	
	20		21
		26	27
		31	

ऊपर से नीचे:-

१. अजय रेवगन, आयशा जुल्का, करिस्मा कपूर की 'बेशक तुम मेरे मुहब्बत हो' गीत वाली फिल्म-२
२. 'मेरी छतरी के नीचे आज' गीत वाली धर्मेन्द्र, आदित्य, नसीरुद्दीन शाह, सोनु वालिया, पद्मवी, एकता की फिल्म-४
४. अशोक, प्रदीप, मीना कुमारी की 'दिल जो कह न सका' गीत वाली फिल्म-२, २
६. 'एक तो ये बैटो सावन' गीत वाली दिलीपकुमार, शर्मिला की फिल्म-३
११. विश्वजीत, माला की 'रोकना है अगर रोक लो तो मरार' गीत वाली फिल्म-२
१२. 'मुगी ने झूठ बोला' गीत वाली किशोरकुमार, साधना की फिल्म-४
१४. कंचनलजित, बहोदा की 'तुम अपना रंजोगम' गीत वाली फिल्म-३
१६. फिल्म 'गुरु' में नायक कौन था-३
१६. मनोजकुमार, नंदा, जया की 'पानी रे पानी तेरा रंग कैसा' गीत वाली फिल्म-२
१९. 'सावन बरसता है तुझसे मिलने को' गीत वाली मिथुन, मीनाश्री की फिल्म-४
२०. जीतेन्द्र, गीना रय की 'तेरे हाथों में पहनाके चूड़ियाँ' गीत वाली फिल्म-२
२१. आँखों के रस्ते दिल में' गीत वाली बाँबी देओल, रनी की फिल्म-३
२४. अमिताभ, हेमा मालिनी की 'हो जाता है प्यार' गीत वाली फिल्म-३
२७. 'पानी पानी रे खारे पानी रे' गीत वाली चंद्रबुईसई, अरशद वारसी, रवि गोसाई, तब्बू की फिल्म-३

से दाएँ:-

२८. 'दिल है प्यारे जरा' गीत वाली फिल्म-२
२९. फिल्म 'अनकही' के गीत 'आँखों में अनजाने' का गायक कौन है-२
३०. 'आते आते तेरी याद' गीत वाली संजयदत्त, अनिता की फिल्म-२, १, २
२२. अमिताभ, जीनात की 'जिसका मुझे था इन्जारा' गीत वाली फिल्म-२
२३. फिल्म 'सलाखें' में नायक कौन था-२
२४. 'क्यूँ आँचल हमारा गिरा' गीत वाली अश्वयकुमार, रवीना की फिल्म-२
२६. गीत 'दिल के अरमा आँसुओं में' की गायिका कौन है-३
२८. 'काट दिये नाम सब' गीत वाली फिल्म-३
२९. फिल्म 'रंकी' की नायिका कौन थी-२
३०. जीतेन्द्र, जयाप्रदा की 'आईने के सी टुकड़े' गीत वाली फिल्म-१
३१. 'सजना के सामने मैं तो गीत वाली फिल्म-३

फिल्म वर्ग पहली - 2756

अ	मृ	त	गु	स	दी	घा
क्स	ह	म	ल	अ	द	ल
	खे	ल	म	न	र	क
सं	का	का	गी	त	जू	
भ	र	ज	म	न	श	दी
पं	मि	ल	न	मि	मि	ट्रे
ज्म	ल	अ	ल	वे	ल	न
डु	प	भि	दा	दा	औ	
म	दं	म	ल	ल	ज	न
रू	अ	जुं	न	पु	का	र



यामी गौतम जैसी दिखने पर भाबी जी... फेम विदिशा की दो टूक

‘भाबीजी घर पर हैं’ में अनीता भाभी का किरदार निभाने वाली एक्ट्रेस विदिशा श्रीवास्तव दिल से देसी हैं। वह अच्छे काम को तबज्जो देती हैं और पर्दे पर रानी लक्ष्मीबाई बनने की तमन्ना रखती हैं। करीब चार साल बाद एक दिन के लिए अपने होमटाउन बनारस आई अदाकारा ने घूम-फिरकर पुरानी यादें ताजा कीं। इस दौरान उन्होंने हमसे खास बातचीत में बनारस की रौनक से लेकर मुंबई की चकाचौंध पर ढेर सारी बातें कीं। करीब चार साल बाद मैं अपने घर बनारस वापस आई थी। वह भी सिर्फ एक दिन के लिए। सुबह काशी विश्वनाथ के दर्शन किए। मंदिर प्रांगण अब काफी बदल गया है। उसके बाद घूमना शुरू किया। मशहूर काशी चाट भंडार में हमने चाट-गोलगप्पे का लुत्फ उठाया। समझ लीजिए, इसके बिना तो घूमना अधूरा ही है। मैं सबको अपने पुराने घर लेकर गई, जो कि करीब 100 साल पुराना है। छत पर पापड़ सूख रहे थे और अचार रखा हुआ था। घाट पर बोटिंग की, जिसका अपना एक अलग मजा है। हमने काल भैरव के भी दर्शन किए। कहते हैं कि अगर काल भैरव के दर्शन नहीं किए तो काशी विश्वनाथ के दर्शन अधूरे माने जाते हैं। ऐसा नहीं है कि मैंने पहले ये सब कूछ अनुभव नहीं किया है लेकिन इतने समय बाद आई थी तो सब काफी अलग लग रहा था। मैंने शिवरात्रि पर मुंबई वाले घर में भी रुद्राभिषेक करवाया था। बनारस की तो बात ही अलग है। वहीं, मेरा पूरा बचपन बीता है। शहर से बहुत सी यादें जुड़ी हैं। दोस्त भी अपने काम में व्यस्त हो गए हैं जैसे मैं अपने घर से दूर रह रही हूँ। बनारस की रौनक, फलेवर, चाट, कचौड़ी, गलियां इन सबकी बात ही कूछ और है, जो कि आपको मुंबई में नहीं मिलते। हमारे बनारस वाले घर की छत बहुत बड़ी है, जिस पर हम लोग दौड़-दौड़कर खेला करते थे, जबकि यहां तो हम अपार्टमेंट में रहते हैं। जहां पर शुरू होते ही खत्म हो जाता है। मैं खुद को खुशनसीब मानती हूँ कि मुझे अनीता भाभी के किरदार के लिए ज्यादा चुनौतियों का सामना नहीं करना पड़ा। कहीं-ना-कहीं मैं जब इस किरदार को देखती थी तो मुझे ऐसा लगता था कि यह मेरे लिए ही बना है। इस वजह से मैं आत्मविश्वास से भरी हुई थी। ऑडिशन देने के बाद मुझे आसानी से यह किरदार मिल गया, जबकि इतने बड़े किरदार के सिलेक्शन की प्रक्रिया काफी अलग होती है। मुझे दर्शकों का भी खुब प्यार मिल रहा है। सोशल मीडिया पर मुझे नकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं मिली। इस वजह से भी खुद को रोल में डालने में मुझे कोई दिक्कत नहीं हुई।

–विदिशा को यामी समझ बैठते हैं लोग

हां, ये सही है कि मेरी शवल एक्ट्रेस यामी गौतम से मिलती-जुलती है। बहुत बार ऐसा हुआ कि लोगों ने मुझे यामी ही समझ लिया। कहा जाता है कि हर इंसान की शवल के पूरी दुनिया में सात लोग होते हैं लेकिन सबकी अपनी एक अलग पहचान होती है। वैसा ही हमारे साथ भी है। यामी बहुत प्यारी अदाकारा हैं। वह भी काफी अच्छा काम कर रही हैं। ये महज हमारे लिए इत्तेफाक की बात है कि हम एक जैसे दिखते हैं।

–दिल से आज भी देसी हूँ

मैं पहले भी जमीन से जुड़ी हुई थी और आज भी वैसी ही हूँ। मैं पक्की बनारसी हूँ और मुझे अपनी जड़ें पता हैं। मुंबई जाकर मैंने बतौर कलाकार काफी कूछ सीखा है। आज भी मुझे बनारस जाकर पहले की तरह ही एक अलग तरह की खुशी मिलती है। मुझे आज भी बाटी-चोखा, गांव का अचार बहुत पसंद है। कहीं-न-कहीं मैं आज भी दिल से देसी हूँ। भले ही मैं चाहे कितनी भी मॉडर्न अनीता भाभी या विदिशा क्यों ना बन जाऊं।

–अच्छा काम मिलेगा तो जरूर करूंगी

विदिशा श्रीवास्तव बताती है कि तमिल, तेलुगू और मलयालम इंडस्ट्री में काम करने के बाद बॉलीवुड फिल्मों में डेब्यू के बारे में एक्ट्रेस ने कहा कि अभी तो मेरा सारा ध्यान ‘भाबीजी घर पर हैं’ पर है। अगर भविष्य में कूछ अच्छा मिलेगा तो जरूर मैं वो काम करना चाहूंगी। पसंदीदा जॉनर की बात की जाए तो मुझे ऐतिहासिक किरदार निभाने का शौक है जैसे पद्मावत, जोधा-अकबर टाइप फिल्में मुझे बहुत पसंद हैं। मैं पर्दे पर रानी लक्ष्मी बाई जैसा किरदार निभाना चाहती हूँ।

–17-18 देशों की कर चुकी हूँ यात्रा

अभिनय के अलावा मुझे घूमने में बहुत मजा आता है। मैं पैसे कमाती हूँ और ट्रेवल करके उड़ा देती हूँ। जब भी मुझे काम के बीच में समय मिलता है तो मैं कहीं घूमने निकल जाती हूँ। अब तक मैं 17-18 देशों की यात्रा कर चुकी हूँ। खुद को एक्सप्लोर करने में एक अलग खुशी मिलती है। आगे भी इसी तरह घूमना-फिरना जारी रखूंगी। इसके अलावा, मुझे पेंटिंग करना भी बहुत अच्छा लगता है और मुझे डांसिंग का भी काफी शौक है।



दो साल बाद प्रदर्शित होगी फर्जी-2

शाहिद कपूर इन दिनों अपनी डेब्यू सीरीज वेब सीरीज फर्जी की सफलता से खासे उत्साहित नजर आ रहे हैं। गत वर्ष बॉक्स ऑफिस जर्सी सरीखी असफल फिल्म देने वाले शाहिद फिल्मों में भी खासे सक्रिय हैं। फर्जी बीती 10 फरवरी को ओटीटी प्लेटफॉर्म अमेजन प्राइम वीडियो पर स्ट्रीम की गई थी। उनकी इस वेब सीरीज को समीक्षकों से मिली जुली प्रतिक्रिया मिली थी। हालांकि यह दर्शकों को खासी पसन्द आई। कहने का तात्पर्य है कि फर्जी से शाहिद कपूर का ओटीटी डेब्यू सफल रहा है। सिने गलियारों में बहती हवाओं का कहना है कि इस सीरीज के निर्माता निर्देशक डीके-राज इसके दूसरे भाग की तैयारियों में लग गए हैं। अपनी डेब्यू सीरीज के दूसरे भाग के बारे में स्वयं शाहिद कपूर बड़ा खुलासा किया है। हाल ही में एक प्रोग्राम में पहुंचे शाहिद कपूर ने मीडिया से बातचीत के दौरान फर्जी को लेकर बातचीत की। उन्होंने कहा कि वह अपनी डेब्यू वेब सीरीज को मिले इतने प्यार से काफी खुश हैं। इसे ना सिर्फ भारत में बल्कि ग्लोबली भी काफी पसंद किया गया है। इसके साथ ही उन्होंने वेब सीरीज की सक्सेस के लिए पूरी टीम को क्रेडिट दिया। इस दौरान फर्जी के दूसरे सीजन के सवाल पर शाहिद कपूर ने कहा कि उन्हें यकीन है वेब सीरीज का दूसरा सीजन बनेगा लेकिन इसमें समय लगता है। उन्होंने कहा कि पोस्ट प्रोडक्शन में डेढ़-दो साल लगते हैं क्योंकि इसे 35-40 भाषाओं में डब किया जाता है और 200 देशों में रिलीज किया जाता है। शाहिद कपूर ने कहा कि फर्जी 2 को रिलीज होने में दो साल और लगेंगे। ज्ञातव्य है कि वेब सीरीज फर्जी में शाहिद कपूर के अलावा विजय सेतुपति, राशि खन्ना, कैके मेनन, अमोल पालेकर सहित कई बड़े कलाकार नजर आ रहे हैं। वेब सीरीज फर्जी का निर्देशन राज निदिमोरी और कृष्णा डीके ने किया है। यह जोड़ी वेब सीरीज की दुनिया में द फेमिली मैन के कारण हमेशा चर्चाओं में रहती है। शाहिद कपूर के वर्क फ्रंट की बात करें तो साल 2023 में उनकी दो फिल्में रिलीज होने वाली हैं।



अमिताभ और धर्मेन्द्र के घर को मिली बम से उड़ाने की धमकी

महानायक अमिताभ बच्चन और एक्टर धर्मेन्द्र पर संकट मंडरा रहा है। हाल ही में दिग्गजों के घरों को बम से उड़ाने की धमकी दी गई है, जिसके बाद से मुंबई में दहशत का माहौल पैदा हो गया है। मामले की सूचना मुंबई पुलिस को दे दी गई है, जिसके बाद पुलिस धमकी देने वाले शख्स का पता लगाने में जुटी है। दरअसल, नागपुर पुलिस कंट्रोल को फोन पर एक अज्ञात शख्स द्वारा धमकी देकर कहा गया है कि बिजनेस टायकून मुकेश अंबानी, बॉलीवुड एक्टर अमिताभ बच्चन और धर्मेन्द्र के घर को बम से उड़ा दिया जाएगा। उनके घर के बाहर बम लगाए गए हैं। फोन करने वाले ने यह भी दावा किया कि आतंकी हमले को अंजाम देने के लिए हथियारों से लैस 25 लोग मुंबई के दादर पहुंचे हैं। इस बाबत नागपुर पुलिस कंट्रोल ने मुंबई पुलिस को सूचना दे दी है। पुलिस पूरी तरह सतर्क हो गई है और फोन करने वाले का पता लगाने में जुट गई है।

यामी की अगली फिल्म चोर निकल के भाग नेटफिलक्स पर होगी प्रदर्शित

यामी गौतम बड़े पर्दे से साथ ओटीटी प्लेटफॉर्म पर भी धमाल मचा रही है। यामी गौतम धर इन दिनों अपनी फिल्म लॉस्ट को लेकर काफी चर्चा में बनी हुई हैं। इस फिल्म में उन्होंने एक खोजी पत्रकार की भूमिका निभाई है जो एक लापता दलित युवक की तलाश में लगी है। इसकी तलाश उसे राजनीतिक गलियारों के काले पक्ष से रूबरू कराती है। उनकी ये फिल्म ओटीटी प्लेटफॉर्म जी5 पर 16 फरवरी को रिलीज हो गई है। इस फिल्म में अपने अभिनय के लिए यामी खासी सुर्खियां बटोरने में सफल हुई हैं। लॉस्ट के बाद यामी गौतम अपनी अगली फिल्म चोर निकल के भाग को लेकर सुर्खियों में आ गई हैं। हाल ही में इस फिल्म की प्रदर्शित तिथि की घोषणा की गई है। चोर निकल के भाग में यामी गौतम के साथ सनी कोशल अपने अभिनय का जलवा बिखरते नजर आएंगे। यह फिल्म ओटीटी प्लेटफॉर्म नेटफिलक्स पर प्रदर्शित की जाएगी। हाल ही में नेटफिलक्स ने इसकी प्रदर्शन तिथि 24 मार्च घोषित की है। नेटफिलक्स की इस फिल्म की घोषणा गत वर्ष की गई थी। अब फिल्म पूरी हो चुकी है और नेटफिलक्स इसे प्रदर्शित करने जा रहा है। इस फिल्म की रिलीज डेट को लेकर नेटफिलक्स के इंस्टाग्राम पेज से एक पोस्ट शेयर की गई है। जो खूब वायरल हो रही है नेटफिलक्स ने जो अभी हाल ही में इस फिल्म को लेकर पोस्ट शेयर की है, उनमें सनी कोशल दिखाई दे रहे हैं। सनी कोशल का ये लुक आते ही सोशल मीडिया पर छा गया है। खबरों के मुताबिक यामी गौतम और सनी कोशल अभिनीत यह फिल्म थ्रिलर है, जो एक डकैती पर आधारित है।

देबीना बनर्जी की तबीयत बिगड़ी

मशहूर टीवी एक्ट्रेस देबीना बनर्जी इन्फ्लुएंजा बी वायरस की चपेट में आ गई हैं। एक्ट्रेस के प्रवक्ता की तरफ से यह जानकारी दी गई है। टीवी जगत की चर्चित अदाकारा देबीना बनर्जी को लेकर एक चिंताजनक खबर सामने आ रही है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक एक्ट्रेस की तबीयत खराब है, वह इन्फ्लुएंजा बी वायरस से संक्रमित हो गई हैं। बता दें कि अभिनेत्री की संहत से जुड़ी यह जानकारी उनके प्रवक्ता की तरफ से दी गई है। फिलहाल अभिनेत्री अपने परिवार से दूर हैं। बता दें कि देबीना हाल ही में अपने परिवार के साथ श्रीलंका आई थीं। वहां से लौटने के कुछ दिनों बाद से उनकी तबीयत खराब है। जांच कराए जाने के बाद मालूम हुआ कि वह इन्फ्लुएंजा बी वायरस से संक्रमित हैं। हालांकि, देबीना के पति एक्टर गुरमीत चौधरी और उनकी दोनों बेटियां लियाना व दिविशा को संक्रमण नहीं हुआ है। सामने आ रही जानकारी के मुताबिक एक्ट्रेस भी अपने रिकवरी स्ट्रेज पर हैं। देबीना के स्पोर्ट्सपर्सन ने एक बयान जारी कर बताया है, देबीना की तबीयत में सुधार हो रहा है। वह काफी सावधानी बरत रही हैं और खानपान का भी ध्यान रख रही हैं। वह अपने बच्चों से दूर रहकर उनकी देखभाल कर रही हैं और जल्द ही ठीक होकर फिर से लौटेंगी। देबीना ने भी अपनी इंस्टा स्टोरी पर इसकी जानकारी दी है।

मैं सिंगल हूँ, प्यार के लिए अभी वक्त नहीं : कार्तिक

कार्तिक आर्यन ने हाल ही बातचीत में न सिर्फ अपनी आने वाली फिल्मों के बारे में बात की, बल्कि करियर के स्ट्रगल पर भी एक अहम चीज बोली। साथ ही कार्तिक ने अपना रिलेशनशिप स्टेटस बताने के साथ ही यह भी रिवील किया कि किसी लड़की में उन्हें क्या चीज अट्रैक्ट करती है। एक्टर कार्तिक आर्यन इस समय अपनी फिल्म शहजादा को लेकर चर्चा में हैं। फिल्म थिएटर में रिलीज हो चुकी है, जिसे ठीक-ठाक रिव्यूस मिल रहा है। कार्तिक आर्यन की आने वाली फिल्मों का लाइनअप काफी दिलचस्प है। एक तरफ उनके पास कबीर खान जैसे डायरेक्टर की फिल्म है, तो वहीं दूसरी ओर अनुराग बसु की भी एक फिल्म शामिल है। कार्तिक आर्यन ने हाल ही बातचीत में न सिर्फ अपकमिंग प्रोजेक्ट्स पर बात की, बल्कि यह भी दावा किया कि वह सिंगल है।



